कौन थे सीज़र शावेज़?

लेखन: डैना मीचन राव

चित्र: टेड हैमण्ड

भाषान्तर:
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

कौन थे सीज़र शावेज़?

लेखन: डैना मीचन राव

चित्र: टेड हैमण्ड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

सभी स्थानों के शिक्षकों के लिए

- डी.एम.आर

मॉम के लिए

- टी.एच

अनुक्रम

फ्रैस्नो, कैलिफोर्निया का पुराना थिएटर लोगों से खचाखच भरा था। इलाके के खेत-मज़दूर अपने परिवारों के साथ नैशनल फार्म वर्कर्स एसोसिएशन (एनएफडब्लूए) की पहली बड़ी बैठक के लिए जमा हुए थे। सीज़र शावेज़ मंच पर खड़े थे।

शर्मीले स्वभाव के सीज़र जनता के सामने बोलने में झिझकते थे। पर उनकी मन्द मुस्कान और दोस्ताना अंदाज़ ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। खेत-मज़दूरों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए बनाई गई इस युनियन में कई मैक्सीकी-अमरीकी थे, इसकी शुरुआत सीज़र ने ही की थी। ये मज़दूर बेहद ग़रीबी में रहते थे, और उनके साथ काम के दौरान अन्यायपूर्ण सुलूक किया जाता था।

30 सितम्बर 1962 का यह दिन सिर्फ़ युनियन की शुरुआत का दिन नहीं था, बल्की एक आन्दोलन की शुरुआत का दिन भी था। जिसमें एक समूह साथ मिलकर एक विचार को साझा करे, संघर्ष करे, ताकि बदलाव लाया जा सके। एक समय था जब खुद सीज़र भी खेत-मज़दूरी करते थे। उन्होंने अपने और तमाम दूसरे परिवारों को ज़िन्दा बचे रहने, चार पैसे कमाने के लिए, भारी तक़लीफ़ झेलते देखा था। उनका सपना था खेत-मज़दूरों के लिए एक बेहतर भविष्य।

एनएफडब्लूए की इस पहली बैठक में कुछ फ़ैसले लिए गए। सबसे पहले पदाधिकारियों को चुना गया। तब आगामी योजनाओं पर चर्चा की गई। युनियन सदस्यों ने अपना झण्डा फहराया, जिसमें लाल पृष्ठभूमि पर बने एक सफ़ेद गोल में एक काला गरुड़ था। ये रंग दरअसल प्रतीक थे - काला श्रमिकों के कठिन जीवन का, लाल उनकी कुर्बानियों का और सफ़ेद उम्मीद का।
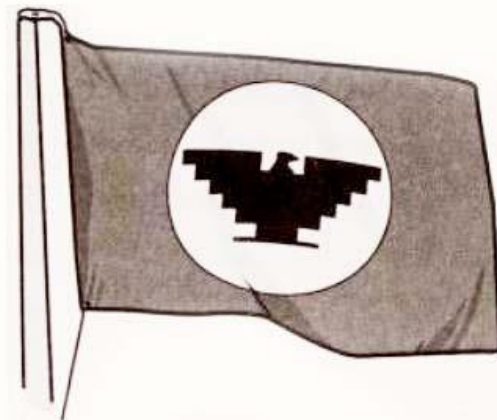
बैठक में उनका नारा भी तय किया गया - 'वीवा ला काउज़ा!' (सबब ज़िन्दाबाद!)।

सीज़र ने युनियन को बनाने में कड़ी मेहनत की थी। फिर भी आगे लम्बी लड़ाई अभी लड़नी बाकी थी। पर वे संकल्प कर चुके थे। उनका मानना था कि दूसरों की मदद के लिए उन्हें अपने समय और पैसों की कुर्बानी देनी होगी। वे यह भी मानते थे कि विरोध हिंसक नहीं शान्तिपूर्ण होना चाहिए।

सीज़र ने एक ऐसे आन्दोलन का नेतृत्व किया जो खेत-मज़दूरों के जीवन में भारी बदलाव ला सका। साथ ही अमरीका में बसे या काम कर रहे मैक्सीकी मूल के लोगों को जिस नज़र से देखा जाता था, उसे भी सीज़र ने बदला। ये खेत-मज़दूर सीज़र के मार्गदर्शन में एकजुट हुए। सबने मिल कर मांग की कि उन पर, उनकी हालातों पर ध्यान दिया जाए। स्थितियाँ ऐसी बनीं कि अमरीका उन्हें और नज़रअन्दाज़ नहीं कर सका।

अध्याय 1

एरिज़ोना का खेत

सिज़ारियो एस्त्रादा शावेज़ का जन्म 31 मार्च 1927 को हुआ था। सीज़र का परिवार एरिजोना के रेगिस्तान के बाहर यूमा नामक कस्बे में रहता था। मामा टैला और पापा चायो, जो सीज़र के दादी-दादा थे, मैक्सिको से अमरीका आए थे। वे उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में यूमा में आ बसे थे। उन्होंने वहाँ ज़मीन ख़रीदी और खेती शुरू कर दी।
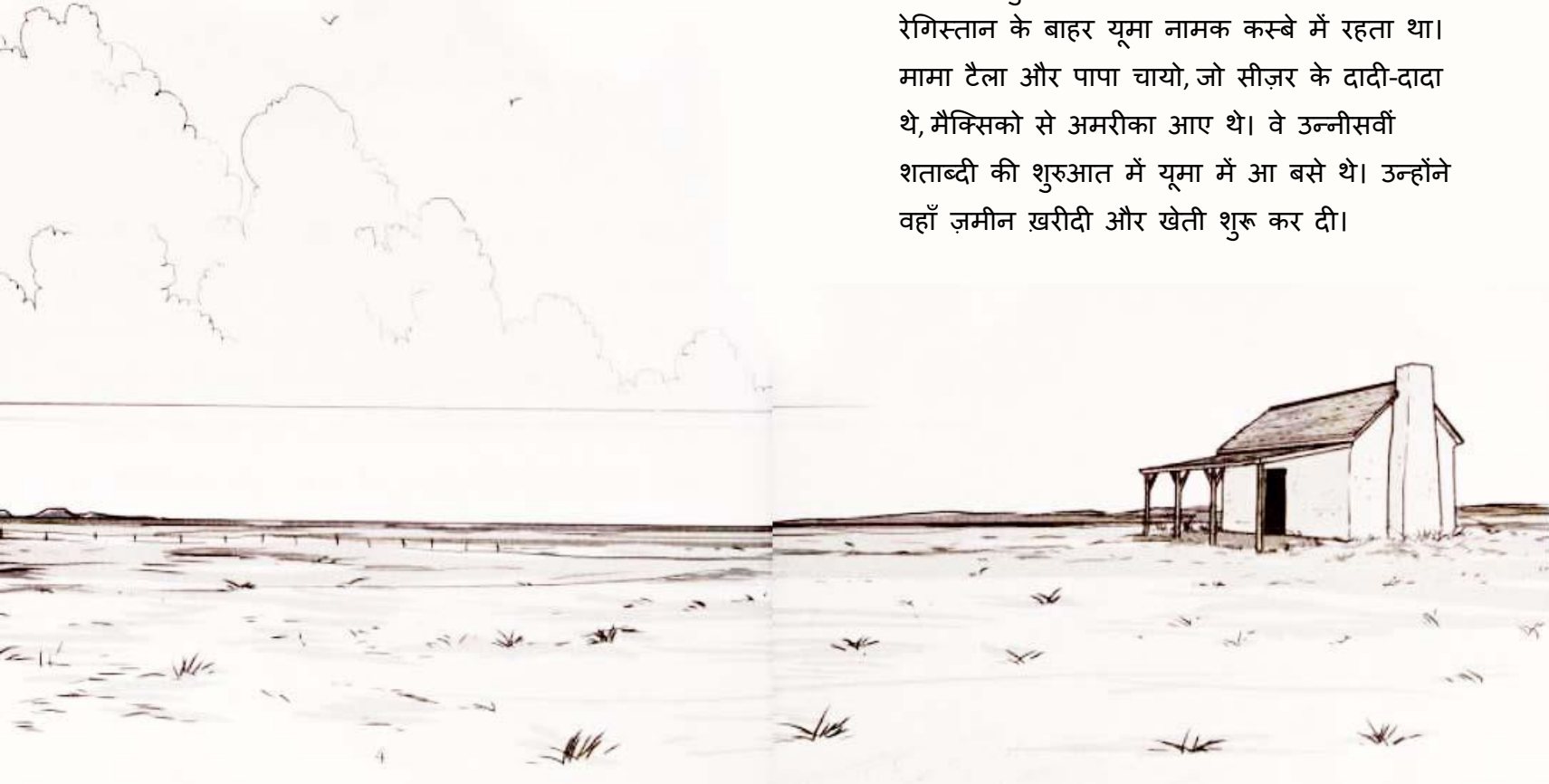
सीज़र के पैदा होने के पहले ही पापा चायो तो चल बसे थे, पर दादी टैला, खेत के मुख्य घर में रहती थीं। सीज़र अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ खेत में ही एक दूसरे कच्चे घर में रहता था। वह अपने छह भाई-बहनों में दूसरा था। उसकी बड़ी बहन रीटा थी और छोटे भाई-बहन थे रिचर्ड, हैलेना, विकी और लैनी। बदकिस्मती से हैलेना की मौत बचपन में ही हो गई। सीज़र का परिवार पहले मुख्य घर के पास ही एक कमरे में रहता था। वहाँ उनके पास कम ही सामान था। वहाँ बिजली और पानी का नलका नहीं था। पर जब उनकी छत टपकने लगी, वे दादी के साथ मुख्य घर में रहने चले गए।

सीज़र और उसका भाई रिचर्ड बचपन में अपना समय खेत में इधर-उधर छानबीन करने और बाहर खुले में खेलने में बिताते। वे उस नहर में तैरते जो आल्फा-आल्फा घास, तरबूज और कपास के पौधों को सींचने के लिए पानी लाती थी।

उन दोनों को घुड़सवारी करना और पेड़ों पर चढ़ना भी पसन्द था। गर्मियों की शामों को परिवार बार्बीक्यू (आग पर माँस आदि भून कर पकाना) करता। आस-पास रह रहे सीज़र के रिश्तेदार भी इसमें साथ जुड़ते।

पर इस मस्ती के साथ लड़कों को काम भी करना पड़ता था। सीज़र के पिता ने उन्हें लकड़ी चीरना, घोड़ों की देखभाल करना, खेतों से खरपतवार हटाना और यह पहचानना भी सिखाया था कि तरबूज कब पक कर तैयाार हो चुका है। पिता लीबार्दो थे तो सख़्त, पर वे धीरज वाले थे। उन्होंने अपने बेटों को बचपन से ही खेतीबारी के बुनियादी कौशल सिखाए थे।

सीज़र की माँ, हुआना अपने बच्चों को नेक इन्सान बनाना चाहती थीं। उन्होंने बच्चों को बदले में कुछ उम्मीद किए बिना, दूसरों के साथ बाँटना, चीज़ें साझा करना सिखाया। हालांकि कई मैक्सीकी लड़के बड़े झगड़ालू हुआ करते थे, सीज़र की माँ का लड़ने या हिंसा करने में विश्वास नहीं था। उनकी कही एक बात सीज़र ने ज़िन्दगी भर याद रखी - "लड़ने के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती है, कोई अकेला खुद से लड़ ही नहीं सकता। यानी कोई अगर लड़ना चाहे तो इन्सान वहाँ से हट जाना चुन सकता है।"

शावेज़ परिवार कैथलिक था। पर खेत के आस-पास कोई गिरजा न था। सो हुआना और मामा टैला ही बच्चों को धर्म शिक्षा देती थीं। बच्चे रात को दादी के बिस्तर के पास इकट्टा होते और संतों की कथाएं सुनते। संतों के पवित्र जीवन की छाप बालक सीज़र के मन पर पड़ी।

1929 की शुरुआत में कई अमरीकी बैंक और बड़े धंधे ठप्प हो गए। लाखों लोगों की नौकरियाँ और रोज़गार के साधन छिन गए। वे ग़रीबी में जीने पर मजबूर हो गए।
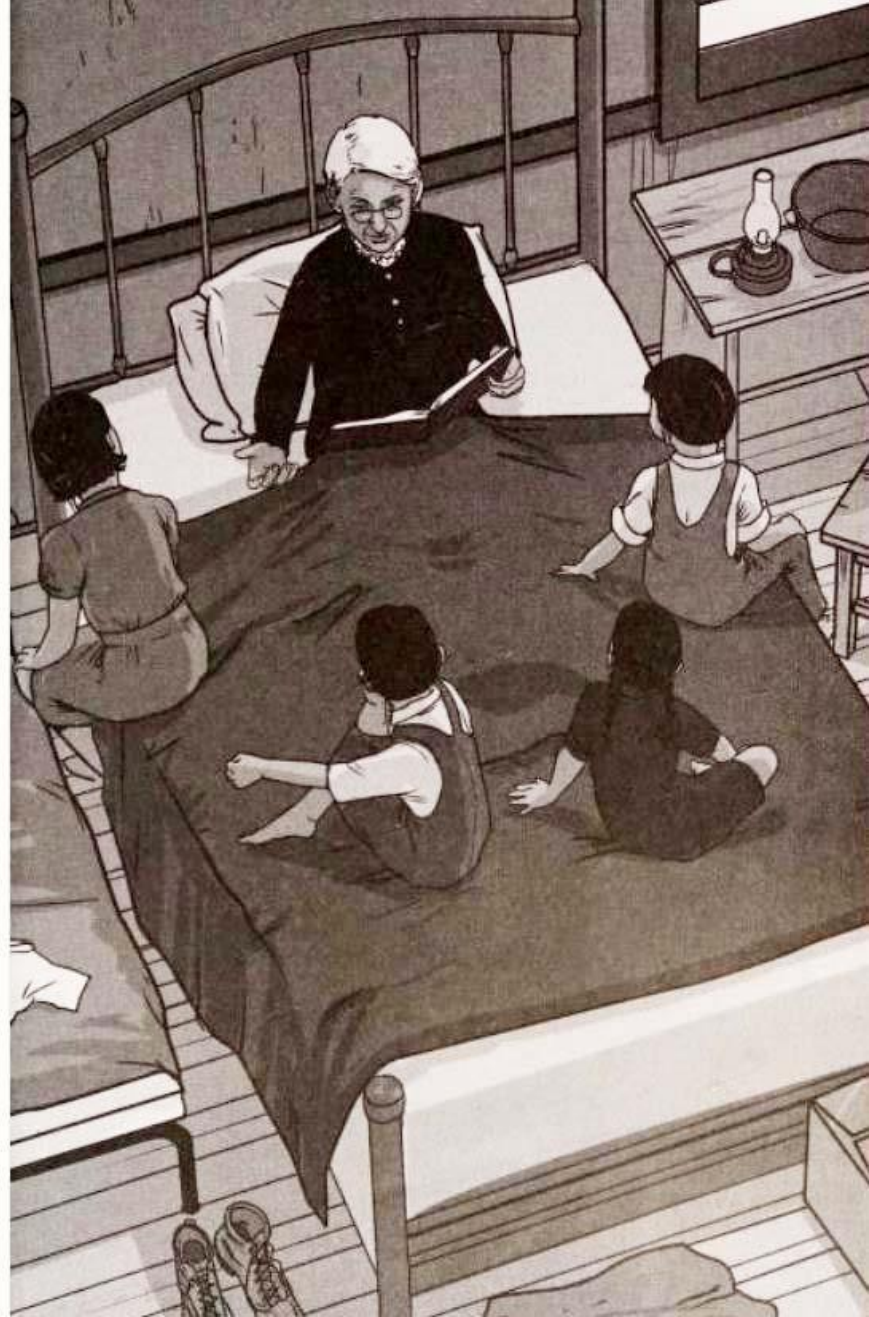
यह दौर महामन्दी का दौर कहलाता है। उस दौर में रोज़गार तलाशना बेहद कठिन था। फिर भी शावेज़ परिवार की परेशानियाँ दूसरे परिवारों की तुलना में कुछ कम थीं। खेत में उनकी मेहनत की बदौलत अनाज, फल, सब्ज़ियाँ थीं। नहर से उन्हें मछलियाँ, मुर्गियों से अण्डे और माँस मिल जाता था। गाय से दूध और पनीर। उदार हुआना उन लोगों को भी खाना खिलातीं, जो इतने खुशकिस्मत नहीं थे।
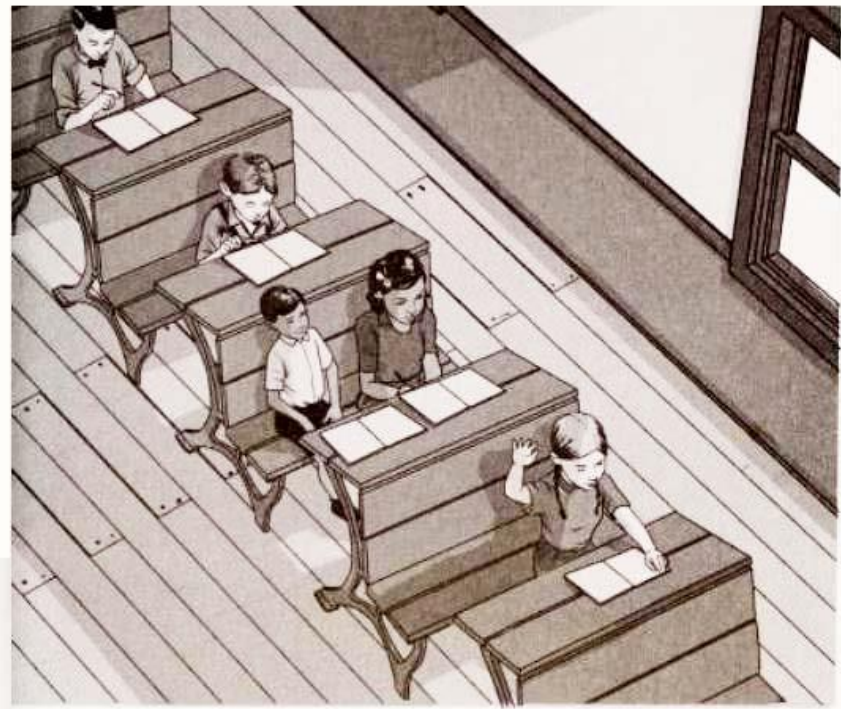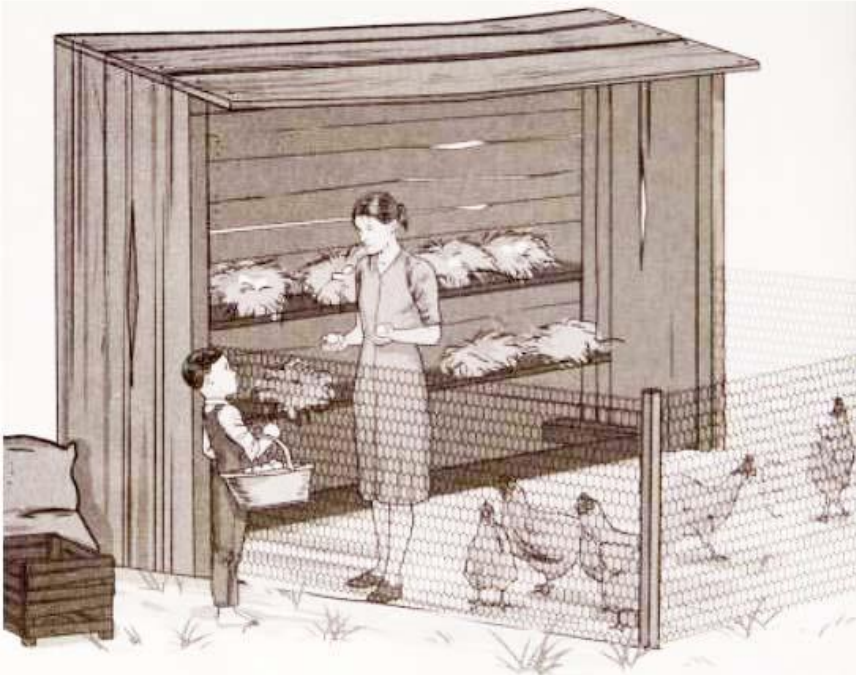
जब सीज़र छह बरस का हुआ तो वो स्कूल में पढ़ने लायक हो चुका था। पर जब वह स्कूल पहुँचा, शिक्षिका ने उसे उसकी बड़ी बहन रीटा के साथ नहीं बैठने दिया। उसे कहा गया कि वह पहली कक्षा के अन्य बच्चों के साथ बैठे। सीज़र रो पड़ा और रीटा के पास ही बैठने की ज़िद करने लगा। आख़िरकार शिक्षिका ने बात मान ली। पर कुछ ही दिनों बाद सीज़र को लगा कि अब वह दूसरे बच्चों के साथ बैठ सकता है।

पर सीज़र को स्कूल खास पसन्द नहीं आया। उसे खेत में होना अच्छा लगता था जहाँ उसे जूते नहीं पहनने पड़ते थे! स्कूल में उसने पहली बार यह भी अनुभव किया कि गोरे लोग मैक्सीकी-अमरीकियों के प्रति कितने बेरहम हो सकते हैं।
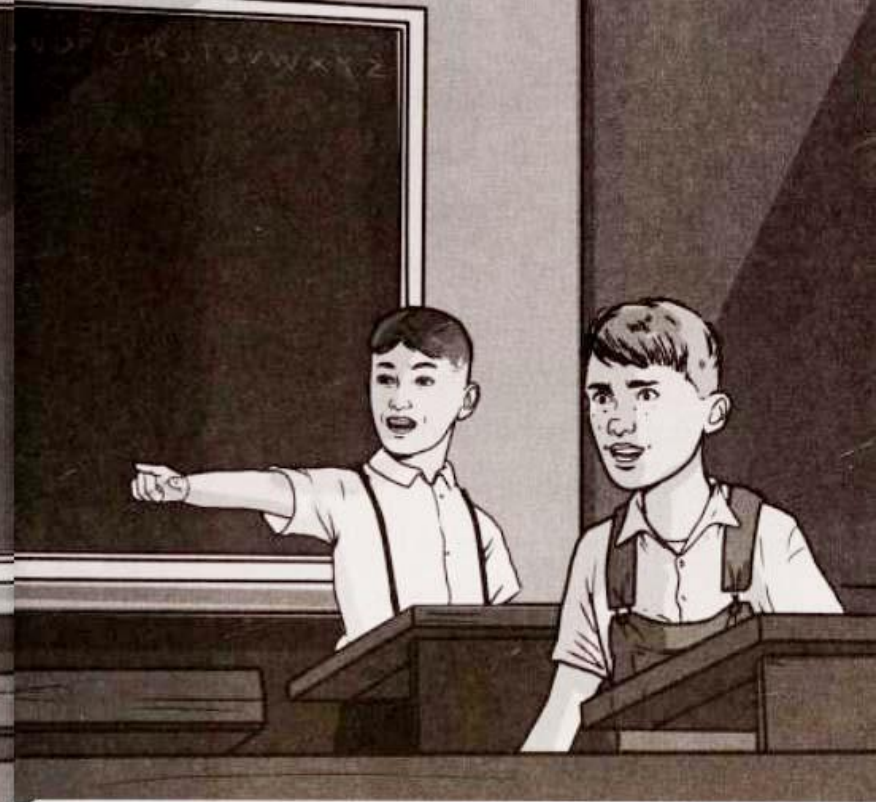
सीज़र के सहपाठी उसकी भूरी चमड़ी का मज़ाक उड़ा उसे 'गंदा' कहते। उससे झगड़े शुरु करना चाहते। सीज़र घर में हिस्पानी बोलता था। पर कक्षा में हिस्पानी बोलने पर शिक्षिका उसकी अंगुलियों के जोड़ों पर रूलर जमाती थीं।

उस वक़्त पंद्रह लाख से भी ज़्यादा मैक्सीकी मूल के लोग संयुक्त राज्य अमरीका में रहते थे। उनमें से कई 1900 के शुरुआती सालों में काम की तलाश में आए थे। तब काम था भी बहुत। पर महामन्दी के साथ काम घटे। कई गोरों ने इसका दोष मैक्सीकी लोगों के मत्थे मढ़ा। इस कारण कई मैक्सीकी मूल के लोगों को मैक्सिको वापस भेज दिया गया - फिर चाहे वे अमरीकी नागरिक ही क्यों न रहे हों। जो फिर भी अमरीका में ही बने रहे उन्हें अपने समुदायों में नस्ली भेदभाव का सामना करना पड़ा।

हालांकि शावेज़ परिवार महामन्दी के दौर में दूसरों से अधिक खुशनसीब रहा था, 1935 तक उनका खेत मुश्किलों से घिर गया। एरिज़ोना में भारी सूखा पड़ा। लम्बे समय तक बारिश नहीं हुई। नहर सूख गई, खेत की माटी तड़कने लगी। कोई फ़सल उगाई ही नहीं जा सकती थी। परिवार के पास गुज़ारे लायक पैसा तक नहीं था।

संयुक्त राज्य अमरीका और मैक्सिको

वह ज़मीन जो आज कैलिफोर्निया, नवाडा, ऊटा, एरिज़ोना, कोलोराडो, न्यू मैक्सिको और वायोमिंग के कुछ हिस्से में आती है वह किसी समय मैक्सिको का हिस्सा थी। 1848 में इन इलाकों को मैक्सिको ने
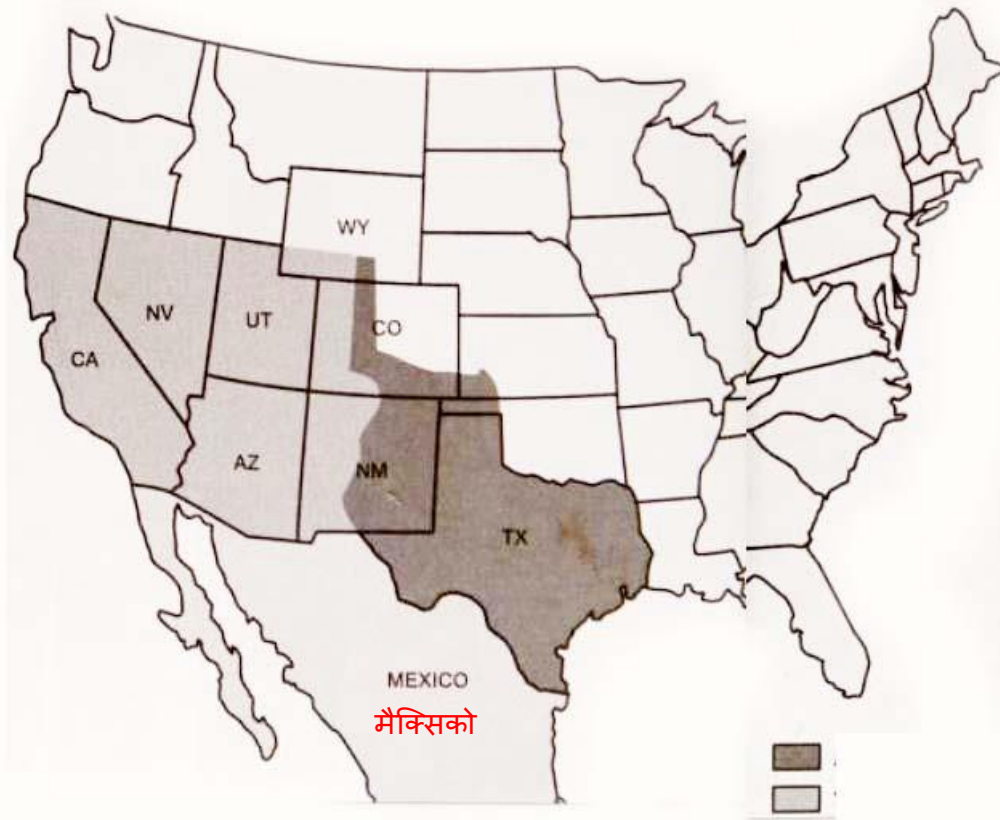
150 लाख डॉलर में अमरीका को बेच दिया था। इन इलाकों में रहने वाले मैक्सीकी लोग तब अमरीकी नागरिक बन गए थे।

1910 से 1920 के बीच मैक्सिको की क्रान्ति के दौरान वहाँ के कई लोग एक अधिक सुरक्षित और बेहतर ज़िन्दगी की तलाश में अमरीका भाग आए। इन नए प्रवासियों का अमरीका में स्वागत किया गया, क्योंकि अपने बढ़ते उद्योगों के जिए अमरीका को मज़दूरों की दरकार थी। इन उद्योगों में कृषि, खनन, निर्माण और यातायात आदि शामिल थे।

हालांकि मैक्सीकी-अमरीकी सबसे कठिन कामों से जुड़े थे, वे जिन शहरों और कस्बों में रहते थे वहाँ उन्हें कई सालों तक अलग मुहल्लों में रहने पर मजबूर किया गया। इतना ही नहीं, उनकी दुकानें, भोजनालय, स्कूल सब अलग थे और गोरों के अलग।

सैकड़ों हजार अमरीकी जो महामन्दी से प्रभावित हुए थे, काम की तलाश में कैलिफोर्निया आए। कैलिफोर्निया पर भी महामन्दी का असर था पर वहाँ सूखा नहीं था।

वहाँ के खेत देश के सबसे उपजाऊ खेत थे। इन खेतों के मालिकों को अपनी फ़सलों को चुनने के लिए मज़दूरों की ज़रूरत पड़ती थी। इन फ़सलों में टमाटर, लैटिस (पत्तेदार सलाद), अंगूर, स्ट्रॉबैरी, चैरी और मक्का शामिल थे।

1938 में सीज़र के पिता भी पश्चिमी कैलिफोर्निया के लिए निकले। इस उम्मीद से कि वे वहाँ अपने परिवार को पालने और अपने खेत को बचाने लायक पैसे कमा सकेंगे।

अध्याय 2

कड़ी मशक्कत, कम भुगतान

सीज़र के पिता लीब्रादो को ऑक्सनाड, कैलिफोर्निया के एक खेत में सेम फलियों को उतारने का काम मिला। जल्द ही उन्होंने अपने परिवार को भी बुला लिया। वे सब एक मैक्सीकी मुहल्ले में यानी 'बारिओ' में, एक छोटे से मकान में रहने लगे। बच्चे केवल आधा दिन स्कूल जाते, ताकि दोपहर में माता-पिता की मदद कर सकें।

सीज़र को एरिज़ोना के रेगिस्तान में अपने खेत और घर की खुली ज़गह की कमी खलती। "मैं एक जंगली बत्तख-सा महसूस करता था, जिसके पर कतर दिए गए हों। मुझे लगता कि मैं पूरी तरह जकड़ा हुआ हूँ।" माह भर के कुछ ही बाद पूरा परिवार वापस यूमा लौट गया। लीब्रादो ने फिर से अपने खेत को बचाने की कोशिश की। पर वह बेहद खर्चीला सिद्ध हुआ। सो 1939 में हार कर शावेज़ परिवार हमेशा के लिए कैलिफोर्निया चला आया। सीज़र तब महज तेरह बरस का था।

कैलिफोर्निया के खेत ज़्यादातर अमीर ज़मीनदारों के थे, जो अपनी उपज को बड़े कॉरपोरेशनों को बेचते थे। वे फ़सल उतारने के वक़्त हज़ारों खेज-मज़दूरों को लगाते थे। इन मज़दूरों को प्रवासी मज़दूर कहा जाता था। क्योंकि वे फ़सल उतारने के मौसम के हिसाब से दक्षिणी और मध्य कैलिफोर्निया में एक से दूसरे कस्बे में जाया करते थे। गर्मियों में व्यस्तता सबसे ज़्यादा रहती थी। क्योंकि तब लीमा बीन की फली, आवाकाडो, मक्की, मिर्च, अंगूर और टमाटर पक कर तैयार होते थे। पतझड़ के बाद से साल के अन्त तक वे कपास चुनते थे। सर्दियों से बसन्त के आने तक गाजर, फूल गोभी, ब्रौकली और पत्ता गोभी तोड़ी जाती थी। बसन्त में तरबूज़ों, फलियों और चैरी की फसल उतारने का वक़्त होता था।

तोलते। कभी वे पहले से तय की हुई मज़दूरी चुकाने से ही मुकर जाते।

खेतों में खटना कमरतोड़ होने के साथ स्वास्थ्य के लिए भी नुकसानदेह था। खेत मालिक तपती गर्मियों में भी पानी की व्यवस्था नहीं करते थे। खेतों में पेशाबघर भी नहीं होते। मज़दूरों को उन्हीं खेतों का इस्तमाल करना पड़ता जहाँ वे काम कर रहे होते। सर्दियों में ये खेत ठण्डे होते और मिट्टी फिसलन भरी। उन्हें काम के लिए छोटे हत्थों वाले फावड़े दिए जाते, जो 'कौरटीटोस' कहलाते थे। वे मज़दूरों को लगातार झुकने पर मजबूर करते जिससे मज़दूरों को पीठ की तकलीफ हो जाती थी।

खेत-मज़दूरों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती, पर खेतों के मालिक उनके साथ सही सुलूक नहीं करते थे। कभी वे उनका भुगतान करने में देरी करते, तो कभी पैसा चुकाते ही नहीं। परिवार के गुज़ारे लायक पैसा कमाने के लिए लीब्रादो, हुआन, सीज़र और उसके ज़्यादातर भाई-बहन खेतों में काम करते। इसके बावजूद किसी-किसी दिन शावेज़ परिवार की कुल कमाई सिर्फ़ 30 सेंट होती! गिनती करने वाले बॉस कभी उनके आलुओं के बोरों को ग़लत गिनते, तो कभी कपास की बोरियों का वज़न कम

खेतों में साँस लेना भी ख़तरनाक था। रसायनों से बने ज़हरीले कीटनाशकों का फ़सल पर छिड़काव किया जाता, जिसे मज़दूर अक्सर साँस के साथ अन्दर लेते थे।

यह वह ज़िन्दगी नहीं थी जिसकी कल्पना शावेज़ परिवार ने कैलिफोर्निया आते वक़्त की थी। उन्होंने तो सोचा था कि उन्हें सम्मान, काम और एक बेहतर भविष्य मिल सकेगा। पर सच यह था कि वे जितना पैसा कमा पा रहे थे वह खाने-पीने, पेट्रोल और मकान किराए के लिए भी जस-तस पूरा पड़ता था। उन्हें हमेशा एक से दूसरे खेत तक सफ़र करना पड़ता, जहाँ फ़सल कटने को तैयार हो। यह सारी मशक्कत सिर्फ पेट भर पाने के लिए करनी पड़ती थी।

जरूरत है
कपास बीनने
वालों की

कैलिफोर्निया के उत्पादकों के पास अपने मज़दूरों के साथ बेहतर सुलूक करने का कोई कारण भी नहीं था। जो कोई शिकायत करता, उसे हटा वे किसी दूसरे को रख लेते। सिर्फ मैक्सीकी नहीं, फिलिपीन्स और एशिया के दूसरे देशों के प्रवासी मज़दूर भी तो थे।

और थे अफ़्रीकी-अमरीकी और ग़रीब गोरे मज़दूर। उस समय तक़रीबन तीन लाख मज़दूर दूसरी जगहों से कैलिफोर्निया के खेतों में काम की तलाश में आ बसे थे। उनमें से कई अंग्रज़ी नहीं जानते थे, क्योंकि उन्हें स्कूल जा पढ़ने का मौका ही नहीं मिला था। खेतों के अमीर मालिक अधिकतर गोरे थे। उनके पास दौलत के साथ ताकत भी थी और इसका वे भरपूर फ़ायदा उठाते थे।

कुछ खेतों और फल बागानों में मज़दूरों के रहने के लिए शिविर बने हुए थे। वहाँ तम्बुओं की व्यवस्था थी जो भीड़ भरे और बेहद गन्दे होते थे। पचास या उससे भी अधिक परिवारों के लिए सिर्फ़ एक नल होता था। ज़ाहिर था इन शिविरों में बीमारियाँ बड़ी आसानी से फैलती थीं।

हुआना अपने परिवार को शिविरों में नहीं रखना चाहती थी। सो वे रहने के लिए दूसरी जगहें तलाशते। किसी खलिहान में, झोंपड़े में, गराज में, या फिर अपनी ही गाड़ी में। ऑक्सनार्ड में एक सर्दियों में वे एक ऐसे तम्बू में रहे जो बरसात में पानी से भर जाता था। अक्सर उनके पास खाने का समान ख़रीदने तक का पैसा न होता। सो वे नहर के पास उगने वाली जंगली सरसों के पत्ते इकट्ठा करते और नहर में मछलियाँ पकड़ पेट भरते।

शावेज़ परिवार जिस किसी भी कस्बे में चाहे चन्द दिन ही क्यों न टिकने वाला हो, हुआना बच्चों को उतने दिन स्कूल ज़रूर भेजती।

स्कूल के बच्चे ग़रीब होने और हर दिन वही कमीज़ पहन कर आने पर सीज़र का मज़ाक उड़ाते। वे उसके मैक्सीकी उच्चारण पर हंसते। उसे लड़ने की चुनौती देते। पर सीज़र अपनी माँ की सीख याद रखता। वह उलझने के बदले पीछे हट जाता। स्कूल में वह पूरा दिन अपने शिक्षकों और सहपाठियों से सहमा हुआ ही रहता।

मैक्सीकी-अमरीकियों के ख़िलाफ़ नस्ली भेदभाव का सुलूक सिर्फ़ स्कूलों तक सीमित न था। अब जब सीज़र तमाम कस्बों में घूम रहा था, उसने कई समुदायों में इस अलगाववाद पर ग़ौर किया। दुकानों की खिड़कियों पर लिखा होता "केवल गोरों के लिए! मैक्सीकी नहीं!"

सार्वजनिक तरण तालों में सप्ताह के केवल कुछ तयशुदा दिन ही वे लोग तैर सकते थे, जो गोरे न हों। थियेटरों में भी अच्छी सीटें हमेशा गोरों के लिए आरक्षित होती थीं।

जब तक सीज़ीर ने आठवीं कक्षा पूरी की वह तीस अलग-अलग स्कूलों में जा चुका था। उसने आगे हाई स्कूल की पढ़ाई करने से मना कर दिया। उसके परिवार को उसकी मदद की ज़रूरत जो थी। सो अब वह पूरे समय खेत-मज़दूरी करने लगा। उसकी उम्र उस वक़्त सिर्फ पंद्रह बरस की थी।

अध्याय 3

एक नेता का बनना

1943 में जब सीज़र सोलह वर्ष का था, वह डेलानो की एक दुकान में दाखिल हुआ। वहाँ उसने बालों में फूल लगाए एक लड़की को अपने दोस्तों के साथ बर्फ़ का गोला खाते देखा।

लड़की का नाम था हैलन फाबेला। सीज़र के विपरीत वह हाई स्कूल में पढ़ने जाती थी। पर छुट्टियों के दिन अपने माता-पिता के साथ खेतों में काम भी करती थी। सीज़र और हैलेन मिलने-जुलने, यानी 'डेट' करने लगे। वे एक-दूसरे के साथ काफ़ी समय बिताने लगे।

तब सीज़र ने तय किया कि वह कुछ समय खेत-मज़दूरी बन्द करना चाहता है।
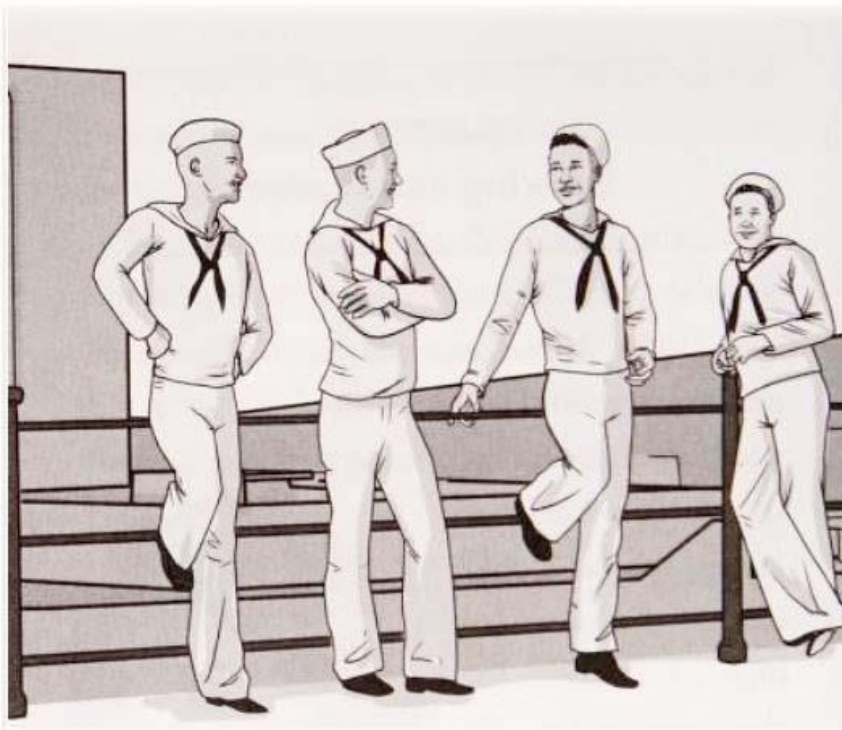
वह नौसेना में भरती हो गया और उसने कैलिफोर्निया छोड़ा। दूसरा विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था, पर सीज़र को लगा कि नौसेना उसे एक अच्छा मौका दे सकेगी। उसे पश्चिमी प्रशान्त महासागर के दो द्वीपों सात्पैन और गुआम, जाने का मौका मिला। सीज़र नौसेना में सबसे निचले दर्जे के नाविक की तरह काम कर रहा था। उसे नौसेना का जीवन रास न आया। उसे लगातार अफ़सरों का हुकुम बजाना अच्छा नहीं लगा।

दो साल बाद सीज़र कैलिफोर्निया लौट आया। 1948 में हैलन और सीज़र ने शादी की। सीज़र का परिवार बढ़ रहा था, सो उसने परिवार को पालने के लिए तरह-तरह के काम किए। वह तेईस बरस का हुआ तब तक उसके और हैलन के तीन बच्चे हो चुके थे। उसे सान होसे के एक कस्बे में एक काठ गोदाम में लकड़ी छांटने और जमाने का काम मिला। वह अपने परिवार के साथ साल सी प्वेदेस के पूर्वी हिस्से में, एक ग़रीब बारिओ (मुहल्ला) में रहने लगा। साल सी प्वेदेस का मतलब होता है ‘भाग सको तो भाग लो!’

पूर्वी सान होसे में सीज़र की मुलाक़ात फादर डॉनल्ड मैकडॉनल से हुई, जो एक कैथलिक पादरी थे। वे सीज़र से कहते थे कि खेत-मज़दूरों समेत सभी लोगों के साथ न्यायपूर्ण और सम्मानजनक बरताव होना चाहिए। फादर मैकडॉनल ने सीज़र को पढ़ने के लिए कई क़िताबें भी दीं। सीज़र की रुचि ख़ास तौर से गांधी में जगी, जो भारत के राजनीतिक नेता थे और शान्ति और अहिंसा में विश्वास करते थे।

महात्मा (मोहनदास कर्मचन्द) गांधी
(1869-1948)

पश्चिमी भारत में जन्मे मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने लंदन में विधि महाविद्यालय में वक़ालत पढ़ी। दक्षिण अफ्रीका में वक़ालत करते समय उनकी रुचि नागरिक अधिकारों के संघर्ष में जगी।

भारत लौटने पर गांधी अपने देश को ब्रिटिश राज से आज़ाद करने के संग्राम में जुड़े। उन्हें लोग महात्मा कहते थे, जिसका अर्थ ज्ञानी और पवित्र व्यक्ति होता है। गांधी ने अपनी लड़ाई हथियारों से नहीं लड़ी। उनकी आस्था प्रेम और दया के व्यवहार में थी। पर वे उन कानूनों को तोड़ने में नहीं हिचकते थे जो अन्यायपूर्ण थे। वे अपने दुश्मनों का सामना अहिंसा से करते थे। गांधी ने सिद्ध कर दिया कि शान्तिपूर्ण विरोध भी बदलाव की सशक्त ताकत हो सकता है।

गांधी भारत के 'राष्ट्रपिता' के रूप में जाने जाते हैं।

1952 में साल सी प्वेदेस में फ्रैड रॉस नामक एक व्यक्ति आया। फ्रैड और उसके कुछ साथियों ने एक समूह बनाया था जिसका नाम था कम्युनिटी सर्विस आर्गेनाइज़ेशन (सीएसओ)। समूह का मक़सद पुलिस में मैक्सीकी लोगों के ख़िलाफ़ गहराई तक पैठे नस्लवाद से लड़ने का था। रॉस चाहता था कि सीएसओ को समूचे कैलिफोर्निया के मैक्सीकी समुदायों में फैलाया जाए।

फ्रैड रॉस

पहले-पहल सीज़र को रॉस पर भरोसा नहीं हुआ। आख़िर वह एक गोरा इन्सान जो था। वह मैक्सीकी-अमरीकियों की समस्याओं के बारे में भला क्या जानता होगा? पर जल्द ही सीज़र को अहसास हो गया कि फ्रैड सचमें न्याय और दूसरों की मदद करने में विश्वास करता है। फ्रैड भी सीज़र से प्रभावित हुआ। वह सीएसओ के लिए स्वयंसेवक तलाश रहा था। इधर सीज़र भी मदद करने को उत्सुक था।

फ्रैड ने सीज़र को एक काम सौंपा - बारिओ के हरेक दरवाज़े पर दस्तक दे उसे लोगों से कहना था कि वे मत देने के लिए अपना पंजीकरण करवाएं। सीएसओ का मानना था कि अगर ज़्यादा से ज़्यादा मैक्सीकी-अमरीकी चुनावों में अपनी पसन्द के नेताओं को मत दें तो उनके नागरिक अधिकारों की - यानी अमरीका के नागरिकों के रूप में उनके बुनियादी अधिकारों की - रक्षा की जा सकेगी।

फ्रैड का अनुमान था कि अमरीका में रहने वाले कुल मैक्सीकी आबादी का एक चैथाई कैलिफोर्निया में बसा हुआ है। वहाँ के विभिन्न बारिओ में बसे सभी मैक्सीकी, अमरीकी नागरिक नहीं थे। सो लोगों को मतदान के लिए पंजीकृत करवाने के साथ सीज़र ने ऐसे लोगों की मदद के लिए नागरिकता शिक्षा की कक्षाएं भी शुरू कीं।

सीज़र अजनबी लोगों के दरवाज़ों पर दस्तक देने से हिचकता था। वह कद में छोटा और कोमल स्वर में बोलने वाला इन्सान था। पर जल्द ही उसका आत्मविश्वास बढ़ा। वह जितने ज़्यादा लोगों से बात करता, उसे उतना ही ज़्यादा यह लगता कि सीएसओ एक बेहद ज़रूरी काम कर रहा है।

सीज़र अब बेहद व्यस्त हो गया था। 1952 तक उसके और हैलन के चार बच्चे हो चुके थे जो तीन साल या उससे कम उम्र के थे। सीएसओ की सेवाएं सान होसे के जिस दफ्तर से दी जाती थीं, वह दरअसल मैक्सीकी-अमरीकियों का सामुदायिक केन्द्र भी था। सीज़र वहाँ आने वाले लोगों के अनुभव सुन परेशान हो जाता। कुछ ने पुलिस की पिटाई झेली थी, तो कुछ निर्वासित किए जाने के ख़तरे का सामना कर रहे थे। सीज़र उनकी जो भी मदद हो सकती थी, ज़रूर करता था।

सीज़र उम्र में दूसरे दशक के बीच पहुँच चुका था। पर वह क्रमशः मैक्सीकी-अमरीकियों और खेत-मज़दूरों के नेता के रूप में उभरने लगा था। कुछ ही समय में वह सीएसओ का पूर्णकालिक कार्यकर्ता बना, उसे वेतन मिलने लगा। सीज़र का काम अब अपने समुदाय के परे, समूचे कैलिफोर्निया के कस्बों और शहरों में फैला। वह मैक्सीकी-अमरीकियों के घरों में छोटी बैठकें आयोजित करता। पर जब लोगों की रुचि बढ़ती ये बैठकें बड़ी बैठकों में तब्दील हो जातीं। सीज़र को इन बैठकों में अपनी मदद के लिए कई स्वयंसेवक भी मिलते। जब उस इलाके में सीएसओ की एक शाखा बन जाती और ठीक से चलने लगती, सीज़र किसी दूसरे कस्बे या शहर में चले जाते।

1958 में सीज़र इस बात से वाक़िफ़ हुए कि मैक्सीकी-अमरीकी खेत-मज़दूरों की मुख्य समस्या थी ब्रासैरो नामक एक कार्यक्रम। इसके तहत खेत-मालिक उन कामों के लिए मैक्सिको से अस्थाई मज़दूर लाते थे, जो कानूनन अमरीकी नागरिकों के थे (ये नागरिक अधिकतर मैक्सीकी-अमरीकी थे जो कैलिफोर्निया में रहते थे)।

सीज़र ने इस मसले पर सरकारी जाँच की मांग की। वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि खेत-मालिक कानून तोड़ रहे हैं।

इधर सीएसओ के अधिकारियों ने यह समझ लिया था कि सीज़र एक मज़बूत नेता के रूप में उभर चुके हैं। उन्होंने दसियों-हज़ार नए मतदाताओं के पंजीकरण करवाए थे। मैक्सीकी-अमरीकी समुदाय को एकजुट भी किया था।

सो 1959 में, सीएसओ ने सीज़र को अपना राष्ट्रीय निदेशक बना दिया। सीज़र, हैलन और उनके अब तक हो चुके आठ बच्चे, तब लॉस एंजलीस गए। सीज़र को अब कैलिफोर्निया और एरिज़ोना में सीएसओ की सभी गतिविधियों का संचालन करना था।

ब्रासैरो

दूसरे विश्व युद्ध (1939-1945) के दौरान अमरीका में एक कानून बनाया गया, जो खेत-मालिकों को मैक्सिको से अस्थाई मज़दूर लाने की छूट देता था ताकि तैयार फ़सल काटी/उतारी जा सके। यह काम उस वक़्त बाहर के मज़दूरों के लिए इसलिए उपलब्ध था क्योंकि कई स्थानीय लोग युद्ध लड़ने जा चुके थे। मैक्सीकी मूल के जो लोग इस तरह की मौसमी मज़दूरी करते थे उन्हें ब्रासैरो कहा जाता था।

युद्ध खत्म होने के बाद भी कई खेत-मालिक ब्रासैरो से ही काम करवाते रहे। इसलिए क्योंकि उन्हें कम मज़दूरी दी जा सकती थी और उन्हें कम खर्च पर गन्दे, भीड़ और जोखिम भरे शिविरों में रखा जा सकता था। ब्रासैरो की कोई कानूनी सुरक्षा भी नहीं थी, क्योंकि वे अमारीकी नागरिक थे ही नहीं। उन्हें जब चाहे वापस मैक्सिको भेजा जा सकता था। ब्रासैरो व्यवस्था सिर्फ़ खेत-मालिकों के लिए फ़ायदेमन्द थी। पर अमरीकी खेत-मज़दूरों और खुद ब्रासैरो के लिए भी यह अन्यायपूर्ण थी।

अध्याय 4

एन.एफ.डब्ल्यू.ए.

1960 के दशक की शुरुआत में प्रवासी मज़दूरों को काम तलाशने में भरी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। उनमें से कई साल भर में महज 1,000 डॉलर ही कमा पाते, जिसके सहारे गुज़ारा चलाना असंभव था। जो काम वे करते थे वह जोखिम भरा था। साथ ही खेत की व्यवस्था देखने वाले 'बॉस' उन्हें इन्सान की-सी इज़्ज़त तक नहीं देते थे।

सीज़र चाहते थे कि खेत-मज़दूरों की एक युनियन बनाई जाए। क्योंकि संगठित हो जाने पर काम देने वालों के साथ मोल-भाव किया जा सकता था। 1960 के दशक तक कई युनियनें बन चुकी थीं। गोदामों में काम करने वालों की, शिक्षकों की, दमकल-कर्मियों की, खान-मज़दूरों की, ट्रक चालकों की और दूसरे उद्योगों के श्रमिकों की। सीज़र को लगने लगा कि अगर खेत-मज़दूरों की भी युनियन होती तो खेत-मालिकों से बेहतर भुगतान और सुरक्षित कार्यस्थितियों पर बात की जा सकती थी।

सो 1962 में सीएसओ के साथ कुछ ही वर्ष काम करने के बाद सीज़र ने इस्तीफ़ा दे दिया। वे अपनी शर्तों पर, अपनी तरह से खेत-मज़दूरों की युनियन बनाना चाहते थे। सीज़र और उनका परिवार वापस डेलानो लौट आया। हैलन और सीज़र के कई रिश्तेदार अब भी वहीं रहते थे और उन्हें सहयोग दे मदद कर सकते थे। सीज़र और हैलन के पास खास बचत तो थी नहीं। सो हैलन खेतों में फ़सल चुनने का काम करने लगीं। सीज़र खेतों में या फिर अपने भाई रिचर्ड के साथ, जो बढ़ई था, घरों के निर्माण का काम करने लगे।

सीज़र की योजना खेत-मज़दूरों की युनियन बनाने की थी। पर कई लोगों को यह विश्वास ही नहीं था कि खेत-मालिक उनके सरोकारों को तवज्जो देंगे। साथ ही वे युनियन में जुड़ने से डरते भी थे।

सीज़र अपना ज़्यादातर समय अपनी गाड़ी से डेलानो के पास सान वॉकीन वैली के कस्बों में जाते, ताकि प्रवासी मज़दूरों से बात कर सकें। वे उनके घरों में जा बैठकें करते। उनकी समस्याएं सुनते।

उन्हें डर इसलिए लगता था क्योंकि उन्हें काम देने वाले खेत-मालिकों के पास खूब ताकत और पैसा था।

वे जानते थे कि इससे पहले जब भी उन्होंने अपने मालिकों का विरोध किया था उनके साथ मार-पीट हुई थी, उन्हें काम से निकाल दिया गया था, जेल में ठूंसा गया था, या फिर वापस मैक्सिको भेज दिया गया था। इसलिए सीज़र की कोशिश रहती की उनकी बैठकें गुप्त रहें। वे यह नहीं चाहते थे कि खेत-मालिक युनियन के बारे में बात करने के कारण मज़दूरों को सज़ा दें।

सीज़र ने कोशिश की कि उनका संगठन युनियन न कहलाए। वे उसे एक आन्दोलन कहते थे। और उम्मीद यह करते थे कि यह आन्दोलन ग़रीब, मेहनतक़श मज़दूरों के साथ होने वाले सुलूक में भारी बदलाव ला सकेगा। ज़ाहिर था कि यह काम अकेले सीज़र नहीं कर सकते थे। उन्होंने डेलोरस हुएरता के साथ क़रीब से काम करना शुरू किया। डेलोरस से उनकी मुलाक़ात सीएसओ के माध्यम से हुई थी।

जहाँ सीज़र की शख्सियत कुछ चुप्पी पर दोस्ताना थी, डेलोरस मुखर और स्पष्टवादी थीं। उनकी जोड़ी असरदार थी। सीज़र के चचेरे भाई मानुएल और छोटा भाई रिचर्ड ने युनियन के बारे में पर्चे छापने में मदद की। अपने बच्चों और भांजो-भतीजों से ये पर्चे बंटवाए। इस दौरान सीज़र को फ्रैड रॉस से भी सलाह मिलती रही।

सीज़र के साथ वे लोग थे जिन पर वे भरोसा करते थे। जो इस मुहिम के लिए अपना समय और पैसा देने को तैयार थे। वे उन लोगों के साथ काम करते रहे जो मानते थे कि खेत-मज़दूरों के साथ किया जाने वाला सुलूक बदलना चाहिए।

डेलोरस हुएरता (1930-   )

डेलोरस क्लारा फर्नान्डेज़ हुएरता, कैलिफोर्निया के स्टॉकटन में पली-बढ़ी थीं। युवावस्था से ही उनकी रुचि सभी लोगों के साथ न्यायपूर्ण और बराबरी के सुलूक में थी। 1955 में वे सीएसओ की स्टॉकटन शाखा का नेतृत्व कर रही थीं। 1962 में उन्होंने सीज़र शावेज़ के साथ मिल कर नैशनल फार्म वर्कर्स एसोसिएशन की स्थापना की।

2012 में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने डेलोरस को प्रैसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम से नवाज़ा। वे आज भी श्रमिकों, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों पर अपनी आवाज़ उठाती हैं।

उन्होंने अपनी युनियन का नाम नैशनल फार्म वर्कर्स एसोसिएशन (एनएफडब्लूए) रखा। युनियन से जुड़ने वाले सदस्य एक मासिक राशि देते थे ताकि युनियन का काम चलाया जा सके। सीज़र ने अपने ही घर में उसका दफ्तर बनाया, वे अपना काफ़ी समय वहीं से फोन करने, पत्र लिखने में बिताया करते। डेलोरस और मानुएल खेतों में जा खेत-मज़दूरों से बातचीत करते। हैलन शावेज़ खर्चों का हिसाब रखतीं। इतने सारे लोगों को जोड़े रखना अक्सर असंभव काम लगता था।

पर सीज़र का विश्वास था कि यह हो सकेगा। वे कहते थे, ''जीतने की इच्छा मज़बूत होनी चाहिए, नहीं तो मकसद हासिल नहीं हो सकेगा।''

क़रीब छह माह बाद एनएफडब्लूए के सदस्यों की संख्या इतनी हो गई की एक बड़ी बैठक बुलाई जा सके। 30 सितम्बर 1962 के दिन फ्रैस्नो कस्बे में तकरीबन डेढ़ सौ सदस्य और उनके परिवार इकट्ठा हुए।
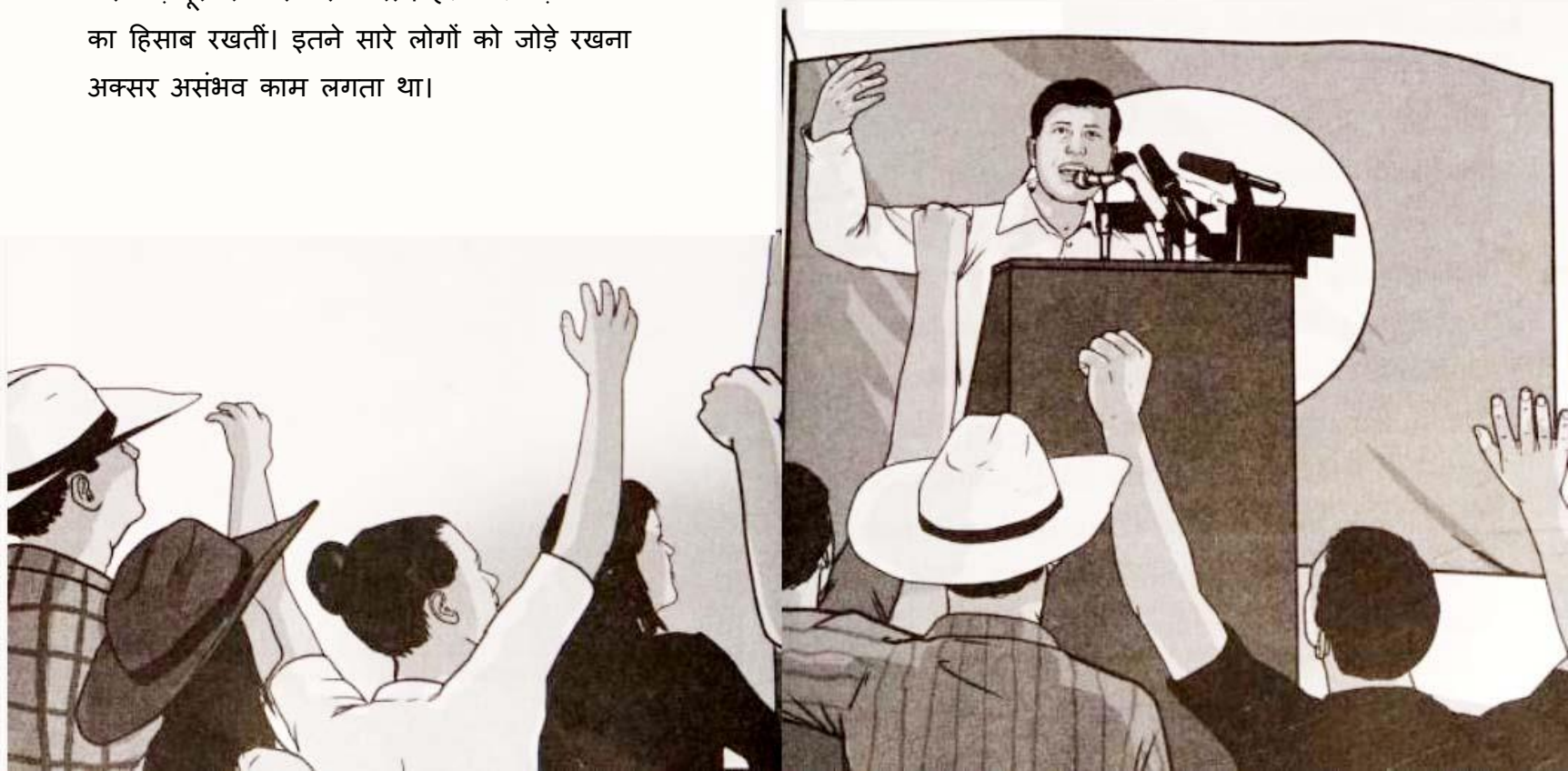
सबने मिल कर तय किया कि उनका पहला लक्ष्य कैलिफोर्निया के गवर्नर (राज्यपाल) से न्यूनतम मज़दूरी दर की घोषणा करवाना है। न्यूनतम मज़दूरी प्रति घण्टे काम के लिए चुकाई जाने वाली राशि होती है, जिससे कम राशि मज़दूर रखने वाले नहीं दे सकते। एनएफडब्लूए चाहता था कि यह राशि कितनी हो इसे तय करने में उन्हें भी शामिल किया जाए। बैठक में उन्होंने अपना नया झण्डा जारी किया जिसमें गरुड़ का चिन्ह था। मौजूद सदस्यों ने एनएफडब्लयूए का नारा भी लगाया - वीवा ला काउसा! (सबब ज़िन्दाबाद!)

युनियन के बढ़ने के बाद रिचर्ड ने डेलानो के एक पुराने गिरजे की मरम्मत कर उसमें एनएफडब्लूए के दफ्तर की व्यवस्था कर दी। युनियन ने एक अख़बार *एल मालक्रीआदो* शुरु किया। हिस्पानी शब्द मालक्रीआदो का मतलब होता है पलट कर जवाब देने वाला यानी बिगडैल। इसका इस्तेमाल अक्सर बेअदब बच्चों के लिए किया जाता है। एनएफडब्लूए के सदस्य काम देने वाले खेत-मालिकों को 'पलट' कर कुछ कहना जो चाहते थे।

वे बताना चाहते थे कि खेतों में उनके साथ कैसी बदसलूकी की जाती है। क्योंकि ज़्यादातर खेत-मज़दूर पढ़ नहीं सकते थे, उन तक अपनी बात पहुँचाने के लिए अख़बार में कार्टूनों का उपयोग किया जाता था। उनका संदेश था कि खेत-मालिक मज़दूरों के साथ बदसलूकी करते हैं और युनियन उनकी मदद कर सकती है। अख़बार बारिओ में बनी परचूने की दुकान में दस सेंट की क़ीमत पर बेचा जाता था।

अन्याय करने वाले खेत-मालिकों यानी उत्पादकों के ख़िलाफ़ युनियन का सबसे असरदार औज़ार था हड़ताल करना। हड़ताल के दौरान मज़दूर फ़सल उतारने/काटने से इन्कार कर सकते थे। वे मालिकों पर इससे दबाव बना सकते थे ताकि उत्पादक उनसे बातचीत करें, माल-तोल करें। मज़दूर तख़्तियाँ ले जुलूस निकालते, धरना देते ताकि उनकी मांगें सुनी जाएं। पर सीज़र हड़ताल की घोषणा कर काम बन्द करवाने के पहले यह चाहते थे कि युनियन के सदस्यों की संख्या बढ़े। पर ज़ाहिर था कि हड़ताल को लम्बे समय तक टाला भी नहीं जा सकता था।

लैरी इटलिआंग

फिलिपीन्स मूल के मज़दूरों की एक युनियन डेलानो के अंगूर उत्पादकों के ख़िलाफ़ हड़ताल करना चाहती थी। इसलिए क्योंकि वे उन्हें उतने पैसे नहीं देते थे जितने दूसरी फ़सलों के उत्पादक देते थे। इस युनियन - एग्रीकल्चरल वर्कर्स ऑरगैनाइज़िंग कमिटी (एडब्लूओसी) का डेलानो में लैरी इटलिआंग नेतृत्व कर रहे थे। इटलिआंग ने एनएफडब्लूए से कहा कि वे भी इस हड़ताल में जुड़ें। अगर दोनों युनियनें मिल कर काम करें तो अधिक असर पड़ सकेगा।

शुरुआत में सीज़र को लगा कि उनका समूह हड़ताल के लिए तैयार नहीं है। क्योंकि उनके सदस्य एक हज़ार से कुछ ही अधिक थे। पर उन्हें यह अहसास भी हुआ कि हड़ताल ही एकमात्र तरीका था जिससे उत्पादक मज़दूरों की बात सुनेंगे।

साथ ही अगर हड़ताल की ख़बर डेलानो के बाहर दूसरे राज्यों और शहरों में फैले तो सभी लोगों का ध्यान खेत-मज़दूरों के मुद्दे पर खींच सकेंगे। इस तरह एडब्लूओसी की अंगूर उत्पादकों के ख़िलाफ़ हड़ताल में एनएफडब्लूए भी जुड़ा।

अध्याय 5

उपेक्षा से इन्कार

20 सितम्बर 1965 को एनएफडब्लूए के सदस्य काम पर नहीं गए। उन्होंने एडब्लूओसी के सदस्यों के साथ जुलूस निकाला और धरना दिया। अंगूर के खेतों, जिन्हें विनियर्ड कहा जाता है, की कई एकड़ लम्बी ज़मीन की सड़क के किनारे-किनारे धरना दिया गया। मज़दूरों के हाथों में जो तख्तियों थीं उन पर लिखा था 'वैलगा!'। हिस्पानी भाषा के इस शब्द का मतलब होता है हड़ताल। वे वैलगा! वैलगा! चिल्ला कर अंगूर बागान में काम कर रहे मज़दूरों को भी हड़ताल से जुड़ने को उकसाने लगे।

दिनों-दिन, तब सप्ताह पर सप्ताह गुज़रे। उत्पादक अपने मज़दूरों को खो बेहद नाराज़ थे। उन्हें अचरज भी हो रहा था कि सीज़र जैसा एक ग़रीब और अदना सा मैक्सीकी-अमरीकी इन्सान इतना असरकार सिद्ध हो रहा था। वे तेज़ संगीत बजाते ताकि हड़तालियों के नारे, संगीत की आवाज़ में डूब जाएं। वे उन पर कुत्ते छोड़ते। इतना ही नहीं, वे उन पर कीटनाशकों का छिड़काव करते। अपनी बन्दूकें तान हड़तालियों को डराते-धमकाते।

पुलिस ने हड़तालियों की कोई मदद नहीं की। बल्की वे उन्हें ही सताने लगे। अक्तूबर में काउंटी (इलाका) के शैरिफ (मुख्य पुलिस अधिकारी) ने वैलगा शब्द के इस्तूमाल को ग़ैर-कानूनी घोषित कर दिया। कहा कि उनका शोरगुल खेतों में अब भी काम कर रहे मज़दूरों के काम में खलल डाल रहा है। जब हड़तालियों के एक समूह ने, जिसमें हैलन भी शामिल थीं, इसके बावजूद "वैलगा!" का नारा लगाया, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कुछ दिन जेल में बिताने पड़े। इस सबके दौरान सीज़र ने सबसे इल्तजा की कि वे शान्ति बनाए रखें, पलट कर लड़े नहीं। सीज़र ने कहा, "हिंसा हमें और हमारे मकसद दोनों को ही नुकसान पहुँचा सकती है।"

जैसी सीज़र ने उम्मीद की थी, हड़ताल ने डेलानो के बाहर रहने वालों का ध्यान आकर्षित किया। कई शहरों से ख़बरनवीस आए ताकि जो कुछ घट रहा था, उसके बारे में लिख सकें। इधर सीज़र ने आस-पास के कॉलेजों में जा छात्रों से बात की, ताकि उन्हें हड़ताल का समर्थन करने वाले स्वयंसेवक मिल सकें।

जल्द ही छात्र, गिरजे के नेता, वकील, सरकारी अधिकारी और राष्ट्रीय श्रम संगठन ने मदद करने में पहल की। सीज़र खुश थे। "सब जिस तरह मिल-जुल कर काम कर रहे हैं वह अद्भुत है। यही तो करिश्मा है," सीज़र ने कहा। स्वयंसेवकों ने अपने समय के साथ, पैसा, खाद्य सामग्री और कपड़े दिए। वे मज़दूरों के साथ धरने पर भी बैठे।
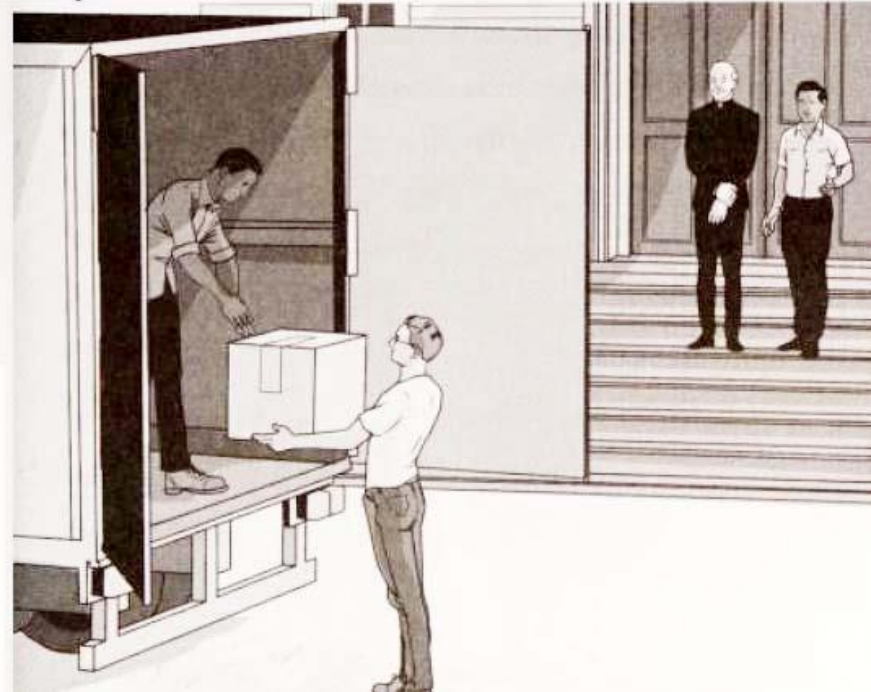
हड़ताल पर बने रहना मज़दूरों के लिए बेहद मुश्किल था। उनकी आमदनी बन्द हो चुकी थी पर खर्चे जस के तस बने हुए थे। कुछ मज़दूर आज़िज़ आ इलाका ही छोड़ गए, ताकि कहीं और जा रोज़गार तलाश लें। कुछ अंगूर छोड़ दूसरी फ़सलों को उतारने में जुटे ताकि परिवार का पेट पाल सकें। तो कुछ लाचार हो अंगूर उत्पादकों के पास ही लौट गए। पर जो प्रवासी मज़दूर मुश्किलातों के बावजूद हड़ताल पर टिके रहे उनका मानना था कि उनका लक्ष्य जायज़ है।

इधर अंगूर लताओं पर लटके-लटके सड़ ही न जाएं, यह सोच अंगूर उत्पादकों ने सान वॉकीन वैली के बाहर से मज़दूर बुलाए।

ये मज़दूर मैक्सिको और लॉस एंजलीस के ग़रीब इलाक़ों से आए। इसके बाद सर्दियों का मौसम आ गया जब अंगूर उत्पादकों को खेत-मज़दूरों की ज़रूरत ही नहीं थी।

इसलिए सीज़र ने तय किया कि वे अंगूर उत्पादकों पर दूसरी तरह से दबाव बनाएंगे। उन्होंने स्वयंसेवकों को लॉस एंजलीस और सान फ्रैंसिस्को के माल लादने-उतारने वाले स्थानों पर रास्ता रोकने भेजा। वे नहीं चाहते थे कि डेलानो के अंगूर बागानों से आए अंगूर दुकानों तक पहुँचें। साथ ही उन्होंने जनता से वहाँ के अंगूरों का बहिष्कार करने को कहा। उपभोक्ताओं से अपील की कि वे उन बागानों के अंगूर न ख़रीदें जो अपने मज़दूरों का शोषण करते हैं, अन्याय करते हैं।

डेलानो में चल रही हड़ताल की ख़बर वॉशिंगटन में अमरीका की संघीय सरकार तक भी पहुँची। कांग्रेस के कुछ सदस्य राष्ट्रीय श्रम संबंध कानून को बदलने के लिए काम कर रहे थे, ताकि कृषि से जुड़े मज़दूरों को भी सुरक्षा दी जा सके। राष्ट्रीय श्रम संबंध कानून 1935 में बना था। इस कानून ने कई उद्योगों में काम करने वाले मज़दूरों को मज़दूर युनियन बनाने का अधिकार दिया था, ताकि वे उचित मज़दूरी पा सकें और उनके कार्यस्थल सुरक्षित हों। पर इस कानून में खेत-मज़दूरों का कहीं ज़िक्र न था।

14 मार्च 1966 को सिनेटर रॉबर्ट एफ. कैनेडी इस मुद्दे पर चर्चा करने कांग्रेस के कुछ अन्य सदस्यों के साथ डेलानो आए। इस समिति ने डेलानो के शैरिफ से भी सवाल किए जिसने हड़तालियों को कोई कानून न तोड़ने के बावजूद गिरफ्तार किया था। सिनेटर कैनेडी ने शैरिफ को फटकारा। सलाह दी कि वह दोपहर के खाने के वक़्त समय निकाल संयुक्त राज्य का संविधान पढ़े!

हड़ताल को शुरू हुए अब तक छह माह गुज़र चुके थे। अगले कुछ महीनों तक अंगूर उत्पादकों को मज़दूरों की ज़रूरत पड़ने नहीं वाली थी। सीज़र ऐसा कोई उपाय तलाशना चाहते थे जिससे लोगों का ध्यान इस मुद्दे पर टिका रहे। वे पूरे देश को याद दिलाते रहना चाहते थे कि डेलानो में हड़ताल अब भी जारी है। सो उन्होंने तय किया कि वे कैलिफोर्निया की राजधानी सैक्रामेंटो तक एक पैदल जुलूस का नेतृत्व करेंगे।

सीज़र का मानना था कि इस पैदल यात्रा से लोगों का ध्यान आकर्षित होगा। साथ ही यह यात्रा दूसरे खेत-मज़दूरों को भी एकजुट कर सकेगी। डेलानो से सैक्रामेंटो तक जुलूस जिन-जिन बारिओ से गुज़रेगा वहाँ के लोग भी युनियन के सदस्य बनेंगे। उन्हें यह उम्मीद भी थी कि सैक्रामेंटो में पहुँचने पर राज्यपाल पैट ब्राउन उनसे बातचीत करेंगे। यह समझ सकेंगे कि अंगूर उत्पादकों को क्यों मज़दूर युनियन का महत्व स्वीकारना चाहिए।

तक़रीबन सत्तर लोग, जिसमें एनएफडब्लूए और एडब्लूओसी युनियनों के सदस्य शामिल थे, 17 मार्च 1966 को डेलानो से निकले। पर डेलानो छोड़ने के पहले ही उनके सामने बाधा आ खड़ी हुई। पुलिस के मुखिया ने तीस अफसरों के साथ उनका रास्ता रोक दिया। सीज़र ने उनसे कहा, "हम यहीं बने रहेंगे। चाहे साल भर क्यों न लगे!" आख़िरकार पुलिस को रास्ते से हटना पड़ा।

डेलानो से सैक्रामेंटो तीन सौ मील दूर था। इस दूरी को पैदल चल तय करने में पूरे पच्चीस दिन लगे। शुरुआत ही में सीज़र का पैर सूजने लगा। पीठ का दर्द बढ़ा। बुखार भी आने लगा। पर उन्होंने लगातार चलना जारी रखा।

जुलूस के सभी यात्री राजधानी की ओर बढ़ते गए। रास्ते में आने वाले खेतों में काम कर रहे मज़दूर उनके साथ जुड़ते। कस्बों के लोग उनका जोश बढ़ाते। संगीत से उनका स्वागत करते। खाना खिलाते। रात को सोने की जगह देते। कई ख़बरनवीस भी जुलूस के पीछे चलते रहे और हड़ताल और युनियन की ख़बरें देश के तमाम अख़बारों में छपती रहीं।

जब जुलूर सैक्रामेंटो से सप्ताह भर की दूरी पर था, स्वयंसेवकों ने सीज़र को यह सूचना दी कि शैनेल इन्डस्ट्रीज़, जो अंगूर के प्रमुख उत्पादकों में एक था, सीज़र से मुलाकात करना चाहता है। हड़ताल और बहिष्कार से शैनेल के धंधे को भारी नुकसान पहुँचा था। कम्पनी करारनामा कर युनियन को मान्यता देना चाहती थी। यानी शैनेल मज़दूरों के बेहतर भुगतान और कार्यस्थितियों पर युनियन से बातचीत करने को तैयार था।
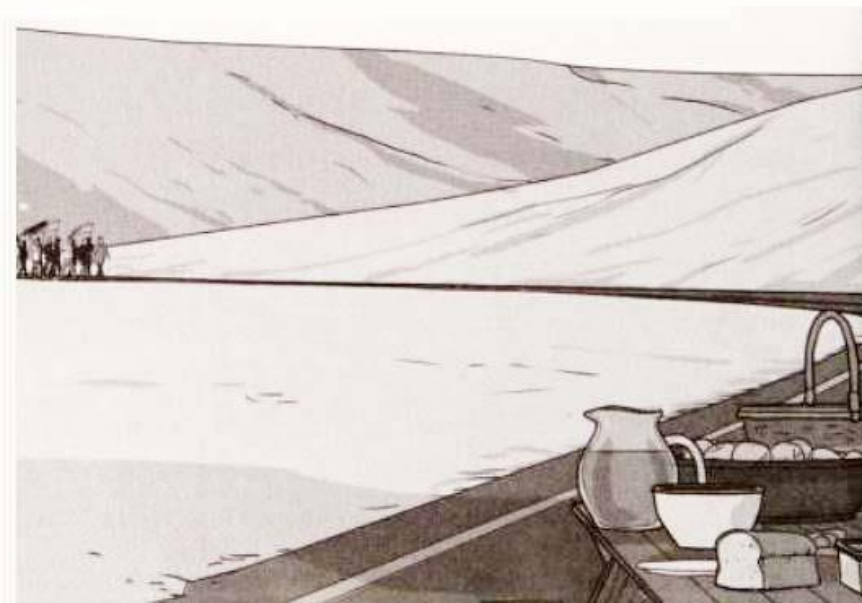
10 अप्रेल 1966 को, ईस्टर सनडे के दिन जुलूस सैक्रामेंटो पहुँचा। कैपिटल बिल्डिंग (संसद भवन) के सामने वाले पार्क में आठ हज़ार से भी ज़्यादा समर्थकों की भीड़ जमा थी। पर राज्यपाल महोदय छुट्टियों पर गए हुए थे। उन्होंने सीज़र से अगले दिन मुलाक़ात करने को कहा। सीज़र ने इन्कार कर दिया। वे राज्यपाल को जता देना चाहते थे कि उनकी टालमटोल से युनियन आज़िज़ आ चुकी है।
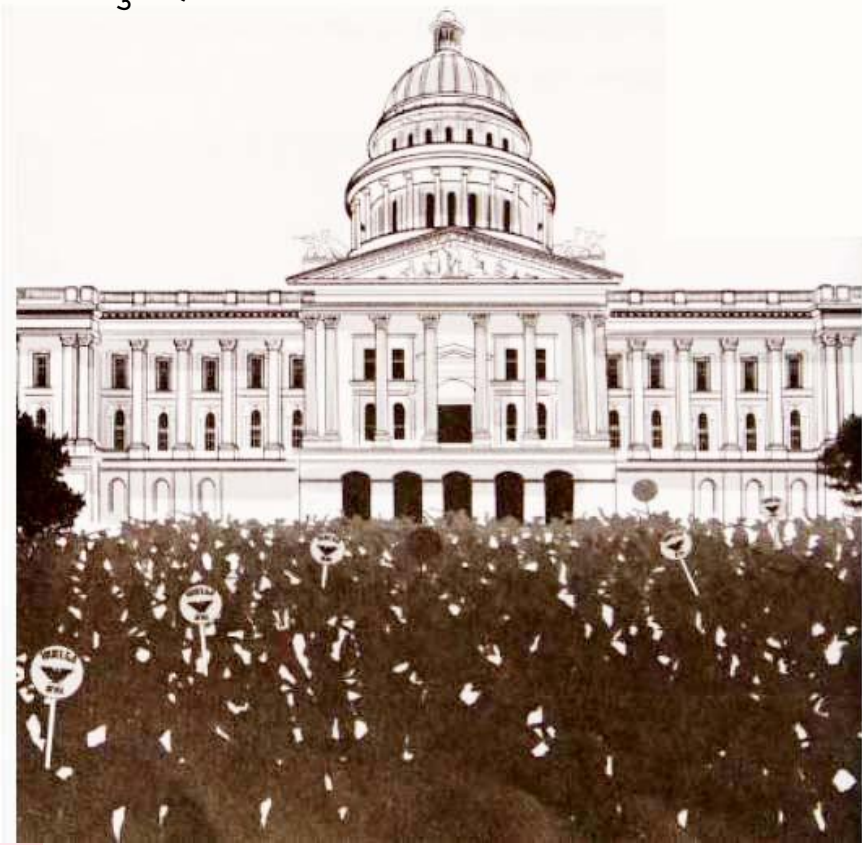
सीज़र, डोलोरस और अन्य वक्ताओं ने उपस्थित जन-समूह से आन्दोलन के भविष्य और युनियन की उम्मीदों की बात कही।

अगस्त 1966 में एनएफडब्लूए तब और मज़बूत बना जब लैरी इटिलाँग और सीज़र ने अपनी युनियनों को एकमेक कर लिया। इस नई सम्मिलित युनियन का नाम युनाइटेड फार्म वर्कर्स ऑर्गनइजिंग कमिटी (यूएफडब्लूओसी) रखा गया। उसी साल कुछ समय बाद रैवरेंड मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने सीज़र को एक तार भेजा जिसमें लिखा था, "हमारे अलग दिखने वाले संघर्ष दरअसल एक ही हैं - आज़ादी, सम्मान और मानवता का संघर्ष।"
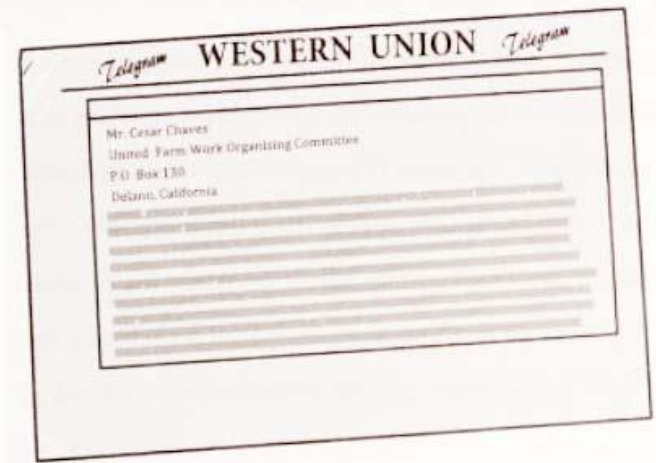
मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

(1929-1968)

मार्टिन लूथर किंग, जूनियर अमरीकी बैप्टिस्ट पादरी और नागरिक अधिकार अन्दोलन के नेता थे। उन्होंने दक्षिण अमरीका में कालों के साथ होने वाले अन्यायपूर्ण बरताव के ख़िलाफ़ कई शान्तिपूर्ण जुलूस निकाले और धरने दिए। 1963 में उन्होंने वॉशिंगटन में एक विशाल विरोध प्रदर्शन के आयोजन में मदद की। इस आयोजन में उन्होंने अपना मशहूर "मेरा एक सपना है," वाला भाषण दिया। 1964 में उन्हें नोबल शान्ति पुरस्कार से नवाज़ा गया। 4 अप्रेल 1968 को मैम्फिस, टैनेसी में उनकी हत्या कर दी गई।

1967 की गर्मियों तक अंगूर हड़ताल अपना दूसरा वर्ष पूरा कर चुकी थी। युनियन ने डेलानो के कुछ अंगूर उत्पादकों के साथ करारनामे कर लिए थे। पर अब भी सैंकड़ों हज़ार मज़दूरों को कोई सुरक्षा नहीं मिल सकी थी। हमेशा की तरह सीज़र उन मज़दूरों के लिए और भी बहुत कुछ करना चाहते थे।

अध्याय 6

अंगूर महा-हड़ताल का ख़त्म होना

सीज़र का मानना हमेशा से यह रहा था कि हिंसा से कहीं अधिक ताकतवर शान्ति होती है। पर युनियन के सभी सदस्य अहिंसा में विश्वास नहीं करते थे। वे हड़ताल के सालों-साल खिंचते जाने से कुण्ठित हो चुके थे। हालांकि युनियन उनकी ज़रूरतों को पूरा करने की भरसक काशिश करती थी, वे ग़रीबी की मार झेल रहे थे। सो कुछ युनियन के सदस्यों ने अंगूर बागान मालिकों के खेतों को नुकसान पहुँचाया। कुछ दूसरों ने वहाँ काम कर रहे मज़दूरों को धमकाया, ताकि वे उत्पादकों का ध्यान आकर्षित कर सकें।

सीज़र जानते थे कि हिंसक कृत्य युनियन के प्रति लोगों का नज़रिया ही बदल देंगे। उन्होंने गांधी को याद किया। उनके तरीक़ों पर सोचा। गांधी अपनी बात को रेखांकित करने के लिए अक्सर उपवास करते थे। सो सीज़र ने तय किया कि वे भी यही करेंगे।

15 फरवरी 1968 सीज़र ने खाना बन्द कर दिया। उन्होंने कहा कि उपवास तब तक जारी रहेगा जब तक यूएफडब्लूओसी के सदस्य उत्पादकों के ख़िलाफ़ हिंसा बन्द नहीं कर देते। भोजन त्यागने के पीछे उनकी यह मंशा भी थी कि युनियन सदस्य यह न भूलें कि युनियन की एकजुटता बनाए रखने के लिए समय, धन और ऊर्जा का त्याग करना ज़रूरी होता है।

उपवास के दौरान सीज़र युनियन के नए मुख्यालय में रहते रहे, जो डेलानो के छोर पर था और 'फॉर्टी एकर्स' कहलाता था। हज़ारों लोग वहाँ सीज़र से मिलने आते रहे। फॉर्टी एकर्स मानो उनके लिए एक तीर्थ ही बन गया।

फॉर्टी एकर्स

वे वहाँ मोमबत्तियाँ जलाते, धार्मिक प्रतीक टांगते, प्रार्थना सभाएं करते। कुछ महिलाओं ने सीज़र के कमरे की खिड़कियों को गिरजे की खिड़कियों के काँच जैसे रंग दिया। सीज़र दिन में अपने बिस्तर पर लेटे, बैठे, काम करते। शाम को वे आने वालों से मिलते। लोग दो-दो घंटे कतार में खड़े रह उनसे मुलाक़ात करने, कुछ बातें कर पाने, की बारी का इन्तज़ार करते।

उपवास करना सीज़र के लिए आसान नहीं था। उनके पेट, टांगों और पीठ में भयंकर दर्द रहने लगा। उनका वज़न तीस पाउण्ड (क़रीब साढ़े तेरह किलो) से भी ज़्यादा कम हो गया। हैलन कहने लगीं कि वे पगला गए हैं। उन्हें सीज़र की सेहत की चिन्ता सतानी लगी।

डॉक्टर भी चिन्तित हुए। सीनेटर कैनेडी ने भी सीज़र से उपवास तोड़ने की गुज़ारिश की। आख़िर सीज़र को लगा कि वे अपनी बात को ठीक से रेखांकित कर चुके हैं। 25 दिनों के लगातार उपवास के बाद सीज़र ने डेलानो पार्क में 10 मार्च 1968 को उपवास तोड़ा।

हैलेन और सीज़र सीनेटर कैनेडी के साथ।

सीनेटर कैनेडी के साथ हज़ारों लोग इस अवसर पर उपस्थित थे।

सीज़र के उपवास तोड़ने के कुछ ही दिनों बाद सीनेटर कैनेडी ने घोषणा की कि वे राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ेंगे।

सीज़र और डोलोरस हुएरता फ़ौरन उनका समर्थन करने को तैयार हुए। उन्होंने कैलिफोर्निया में सीनेटर के लिए चुनाव प्रचार शुरू किया।

5 जून 1968 को दोनों लॉस एंजलीस में कैनेडी के साथ थे। डोलोरस भाषण के दौरान मंच पर उनके साथ खड़ी थीं। पर जिस वक़्त कैनेडी इस आयोजन से वापस लौट रहे थे, तो गोली दाग कर उनकी हत्या कर दी गई। यह एक राष्ट्रीय त्रासदी थी। कई लोगों का मानना था कि कैनेडी डेमोक्रैटिक पार्टी का नामांकन और तब राष्ट्रपति पद भी ज़रूर जीतते।

रॉबर्ट कैनेडी नागरिक अधिकारों के पहले समर्थक नहीं थे जिनकी उस साल हत्या की गई। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर की हत्या इसके दो महीने पहले हुई थी। अब तक सीज़र शावेज़ राष्ट्र स्तर के नेता बन चुके थे। उनके समर्थकों को डर था कि सीज़र की जान को भी ख़तरा है। पर सीज़र इस डर से छिप कर बैठ नहीं गए। उन्होंने अपनी ख्याति का उपयोग कर उत्पादकों को उनकी बात पर ध्यान देने को मजबूर किया।

उन्होंने एक और बड़े और व्यापक 'बहिष्कार' का आगाज़ किया। उन्होंने यूएफडब्लूओसी के स्वयंसेवकों को अमरीका और कनाडा के प्रमुख शहरों में एक संदेश के साथ भेजा। इन स्वयंसेवकों ने लोगों से अपील की और कहा कि वे कैलिफोर्निया में उगाए अंगूरों को ख़रीदना बन्द कर दें। इसलिए क्योंकि उनकी एक भारी कीमत है - कड़ी मेहनत करने वाले ग़रीब खेत-मज़दूरों को शोषण।

युनियन के स्वयंसेवकों ने प्रमुख शहरों के मेयरों से मुलाक़ात की। हर जगह समर्थकों के समूह बनाए, जिसमें छात्र, व्यापारी, धार्मिक व राजनीतिक नेता और गृहणियाँ शामिल थीं। ये लोग उन दुकानों के सामने धरना देते जो कैलिफोर्निया के अंगूर बेचते थे, और ग्राहकों से उनका बहिष्कार करने को कहते।

1970 तक आते-आते अंगूर उत्पादक इस बहिष्कार के चलते कई लाख डॉलर का नुकसान भुगत चुके थे। कई को तो अपने खेत-बागान तक बेच डालने पड़े थे। डेलानो के अंगूर उत्पादकों में अब युनियन का विरोध करने और राष्ट्रीय ध्यान से लड़ने की ताकत न बची थी। उन्होंने सीज़र के साथ बैठक की। मज़दूरों की माँगों पर चर्चा की। उत्पादकों का एक बड़ा समूह यूएफडब्लूओसी के साथ करारनामा करने को तैयार हो गया।

29 जुलाई 1970 को ये अंगूर उत्पादक फॉर्टी एकर्स आए। सीज़र एक विशाल भीड़ के सामने उनके साथ बैठे। सभी को खुशी थी कि यह लम्बी हड़ताल और बहिष्कार आख़िरकार खत्म हो रहा है। युनियन ने उस दिन उनतीस उत्पादकों के साथ करारनामों पर दस्तख़त किए। डेलानो की अंगूर हड़ताल कहलाने वाली यह हड़ताल पाँच साल तक खिंची थी। सीज़र ने पीछे न हटने का संकल्प लिया था। उन्होंने कहा, “हम अपना संघर्ष जारी रखने वाले थे, चाहे इसमें पूरी ज़िन्दगी ही क्यों न लग जाती। सचमें यही हमारा इरादा था!”

इस हड़ताल ने पूरे देश को दिखा दिया था कि ग़रीब और निर्बल भी उन अधिकारों के हक़दार थे जो सभी अमरीकी नागरिकों के अधिकार हैं। हड़ताल करने वाले खेत-मज़दूरों ने भारी कुर्बानियाँ दी थीं। पर उन्होंने तब बहुत कुछ पाया भी था। इकरारनामों में उन्हें 1.80 डॉलर प्रति घंटा की मज़दूरी, स्वास्थ्य योजना, कीटनाशकों से सुरक्षा और अन्य सुविधाओं का वादा किया गया था। सीज़र का आन्दोलन हज़ारों खेत-मज़दूरों की ज़िन्दगियों में सकारात्मक बदलाव ला सका था।

अब जब अंगूर हड़ताल का संघर्ष खत्म हो चुका था युनियन उन मज़दूरों पर ध्यान केन्द्रित कर सकती थी जो दूसरी फ़सलें उतारते थे और युनियन से मदद चाहते थे।

सीज़र ने अब अपना ध्यान सालिनास वैली के लैटिस (पत्तेदार सलाद) के खेतों की ओर मोड़ा।
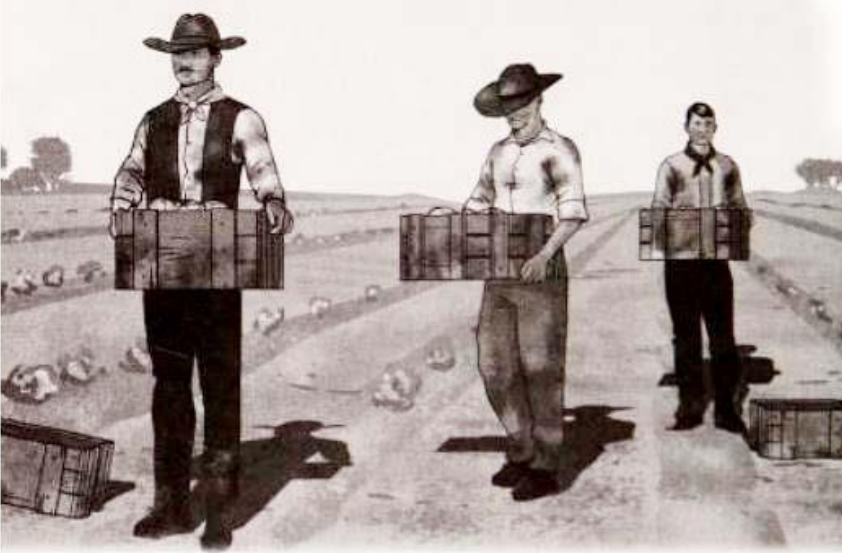
यह युनियन मूलतः वाहन और ट्रक चालकों की थी। वे अपनी युनियन बेईमानी के साथ चलाने के लिए जाने जाते थे। कुछ लोगों का कहना था कि उन्हें खेत-मज़दूरों की कम और खेत-निरीक्षकों और प्रबंधकों की ज़्यादा फिक्र रहती थी। उन पर हिंसा करने और धौंस जमाने के इल्ज़ाम भी अक्सर लगाए जाते रहे थे।

सो सीज़र ने लैटिस हड़ताल और बहिष्कार की घोषणा की। दिसम्बर 1970 में सीज़र को बहिष्कार विरोधी कानून का उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

लैटिस उत्पादकों ने डेलानो में जो हुआ उसे देखने के बाद अपने मज़दूरों को युनियन बनाने की छूट दी। पर यूएफडब्लूओसी के बदले उन्होंने 'टीमस्टर्स' नामक युनियन के साथ करारनामा किया। टीमस्टर्स 1903 से अस्तित्व में था।
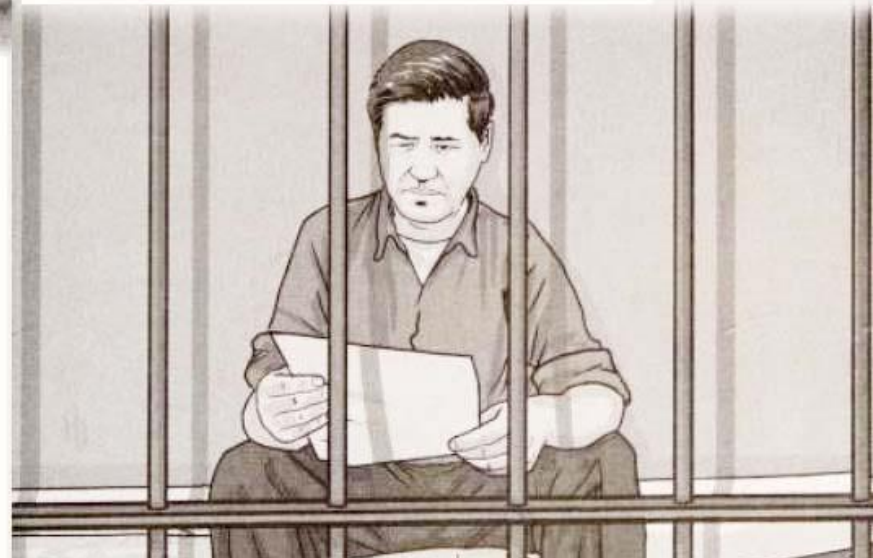
जेल में सीज़र का समय अपनी कोठरी में पढ़ते, ख़तों के जवाब देते और आने वालों से मुलाक़ात करने में बीतता। रॉबर्ट एफ. कैनेडी की विधवा पत्नी एथल और मार्टिन लूथर किंग, जूनियर की विधवा पत्नी कॉरेटा भी इन मिलने आने वालों में शामिल थीं। जेल के बाहर लोगों की भीड़ ने सीज़र के समर्थन में बैठकें और प्रदर्शन किए। बहरहाल सीज़र को क्रिसमस के पहले रिहा कर दिया गया। सीज़र ने कहा, "वे हमें कैद कर सकते हैं, पर वे हमारे सबब को कैद नही कर सकते।"

सीज़र शेवाज़, कॉरेटा स्कॉट किंग, न्यू यॉर्क में लैटिस बहिष्कार जुलूस का नेतृत्व करते हुए

लैटिस (पत्तेदार सलाद) का बहिष्कार

अध्याय 7

विरोध और शान्ति

1970 में सीज़र ने युनियन का मुख्यालय बदला। वे उसे कैलिफोर्निया के एक शान्त, दूरस्थ, 187 एकड़ में बसे समुदाय, ला पाज़ में ले आए। सीज़र हमेशा से चाहते थे कि युनियन सदस्य एक शान्त इलाके में साथ-साथ रहें। यहाँ सदस्यों के लिए साझे शयन कक्ष, सामुदायिक बागान, रसोई-घर, चर्च और शिक्षा केन्द्र थे, जिनका लाभ वे उठा सकते थे। यह खुली जगह सीज़र को अपने बचपन की याद दिलाती थी। इसी दौरान युनियन का नाम बदल कर युनाइटेड फार्म वर्कर्स ऑफ अमेरिका (युएफडब्लू) रख दिया गया।

पर युनियन में सब कुछ शान्ति से नहीं चल रहा था। सीज़र दूसरों के विचारों को हमेशा तवज्जो नहीं देते थे। जो कार्यकर्ता असहमत होते उन्हें वे निकाल देते थे। इधर युनियन केवल कैलिफोर्निया ही नहीं बल्की एरिज़ोना, कैनसास, आइडाहो, ओरेगॉन और फ्लौरिडा तक के उत्पादकों से अदालतों में लड़ रही थी। यानी उन सभी राज्यों में जहाँ खेत-मज़दूरों का इस्तेमाल होता था। जब सीज़र की युनियन के साथ उत्पादकों का करारनामा समाप्त होता तो कई मज़दूर यूएफडब्लू के बजाए टीमस्टर्स के साथ जुड़ जाते। यह दौर कठिन था। डोलोरस हुएरता ने युनियन के लिए एक नया नारा बनाया -'सी से प्वेदे!' (हाँ, यह हो सकता है!)।

किस्मत से फ्लौरिडा में अब एक नए राज्यपाल थे, जैरी ब्राउन। राज्यपाल ब्राउन की खेत-मज़दूरों के अधिकारों में खास रुचि थी। यह लगने लगा कि आख़िर अब जा कर सीज़र को सरकार का सहयोग भी मिल सकेगा! अमरीका के राष्ट्रीय श्रम कानून अब तक भी खेत-मज़दूरों के अपनी पसन्द की युनियन से जुड़ने के अधिकार को सुरक्षित नहीं करते थे। राज्यपाल ब्राउन इस मसले पर कुछ करने को तैयार थे। उन्होंने यूएफडब्लू, टीमस्टर्स और उत्पादकों को आमंत्रित कर अलग-अलग कमरों में बैठाया। वे एक से दूसरे कमरे में जाते रहे और सबको एक प्रस्ताव पर सहमत कर पाए। राज्यपाल ब्राउन ने तब एग्रीकल्चरल लेबर रिलेशन्स एक्ट पर दस्तख़त कर, 5 जून 1975 में उसे कानून बना दिया।

जैरी ब्राउन

आख़िरकार एक ऐसा कानून आया जो मज़दूरों को अपनी पसन्द की युनियन को चुनने का अधिकार देता था।

1984 में अपने एक भाषण में सीज़र ने कहा, ''हमने भविष्य को देखा है और भविष्य हमारा है।'' उनका मतलब यहाँ सिर्फ मैक्सीकी-अमरीकियों से नहीं था बल्की अमरीका में रह रहे समूचे लाटीनो समुदाय से था, यानी हिस्पानी भाषा बोलने वाले देशों - क्यूबा, पोर्तो रीको, डॉमिनिकन रिप्बलिक - के लोगों से था।

सीज़र ने दूसरे मुद्दों पर भी काम किया, जिसमें खेतों में कीटनाशकों के छिड़काव भी शामिल था।

1980 के दशक तक सीज़र ने खेत-मज़दूरों की युनियन बनाने से कहीं अधिक हासिल कर लिया था। उन्होंने दुनिया को दिखा दिया था कि ग़रीब, नस्लवाद और अन्यायपूर्ण कानूनों से पीड़ित होने के बावजूद खेत-मज़दूर एकजुट हो खुद को संगठित कर सकते थे, संघर्ष कर सकते थे। इस संघर्ष से उन्हें बेहतर भुगतान, छुट्टियाँ, स्वास्थ्य योजना, खेतों में सचल शौचालय और पेयजल की व्यवस्था हासिल हो सकी। आख़िकार वे इतना कमा सकते थे कि अपने घर ख़रीद सकें। उनके बच्चे अब खेतों में खटने की जगह स्कूली पढ़ाई पूरी कर सकते थे।

जुलाई 1988 में सीज़र ने फिर से उपवास शुरु किया ताकि कीटनाशकों के मुद्दे पर ध्यान आकर्षित किया जा सके। छत्तीस दिन के उपवास ने उन्हें बेहद कमज़ोर बना दिया। पर उत्पादकों ने कीटनाशकों का उपयोग जारी रखा। इधर सीज़र भी अमरीका भर में घूम खेत-मज़दूरों और लाटीनो समुदाय की समस्याओं पर बोलते रहे। जब वे यात्रा नहीं कर रहे होते वे अपना समय परिवार के साथ गुज़ारते। परिवार में अब उनके आठ बच्चों के साथ कई नाती-पोती थे।

अप्रेल 1993 में सीज़र को एक मामले में युनियन का पक्ष रखने बुलाया गया। वे एरिज़ोना में सान लूई गए, जिसके पास ही वे पले-बढ़े थे। वहाँ वे अपने कुछ मित्रों के साथ रुके। अदालत में पूरा दिन बिताने के बाद वे रात को सोए। अगली सुबह जब उनके मित्र उन्हें उठाने गए तो पाया कि उनकी मौत सोते-सोते ही हो गई थी।

पिछले उपवास के बाद से उनका शरीर बेहद कमज़ोर हो चुका था। वे सिर्फ त्रेसठ वर्ष के थे।

कुछ ही दिनों बाद 29 अप्रेल 1993 को डेलानो में उनका अंतिम संस्कार किया गया। दसियों हज़ार लोग इसमें शरीक़ हुए। शवयात्रा का जुलूस तीन मील लम्बा था। लोग झण्डे, और फूल लिए चल रहे थे। सीज़र के भाई रिचर्ड ने पाइन की लकड़ी से उनका ताबूत बनाया था। उन्हें ला पाज़ में दफ़नाया गया।
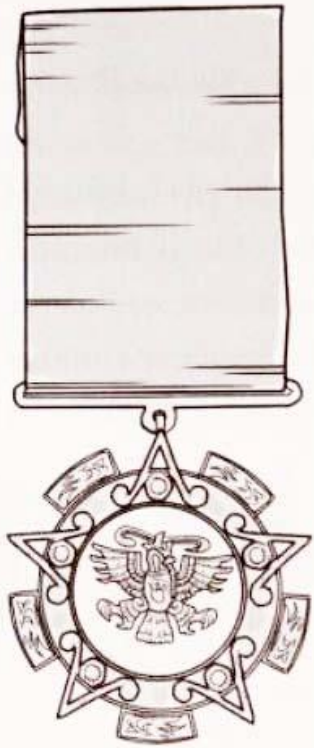
सीज़र की मृत्यु के बाद उन्हें कई सम्मानों से नवाज़ा गया। इनमें मैक्सिको सरकार द्वारा किसी विदेशी को दिया जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान आगिला अज़टैका सम्मान और राष्ट्रपति क्लिंटन द्वारा प्रैसिडेन्शियल मैडल ऑफ फ्रीडम शामिल हैं। अमरीका में उनके नाम से कई पार्क, स्कूल, पुस्तकालय, सड़कें व सामुदायिक केन्द्र बने हैं।

2012 में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने ला पाज़ को, जो युनियन का मुख्यालय था, एक राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया। उन्होंने सीज़र के जन्मदिन, 31 मार्च को सीज़र शावेज़ दिवस घेषित किया। उन्होंने कहा कि अमरीकियों को सीज़र की उपलब्धियों का जश्न समुदाय में लोगों की मदद कर मनाना चाहिए।

येस वी कैन!

2008 में बराक ओबामा ने 'सी से प्वेदे!' से प्रेरणा ले अपने चुनावी अभियान का नारा 'येस वी कैन!' (हाँ हम कर सकते हैं!) रखा।
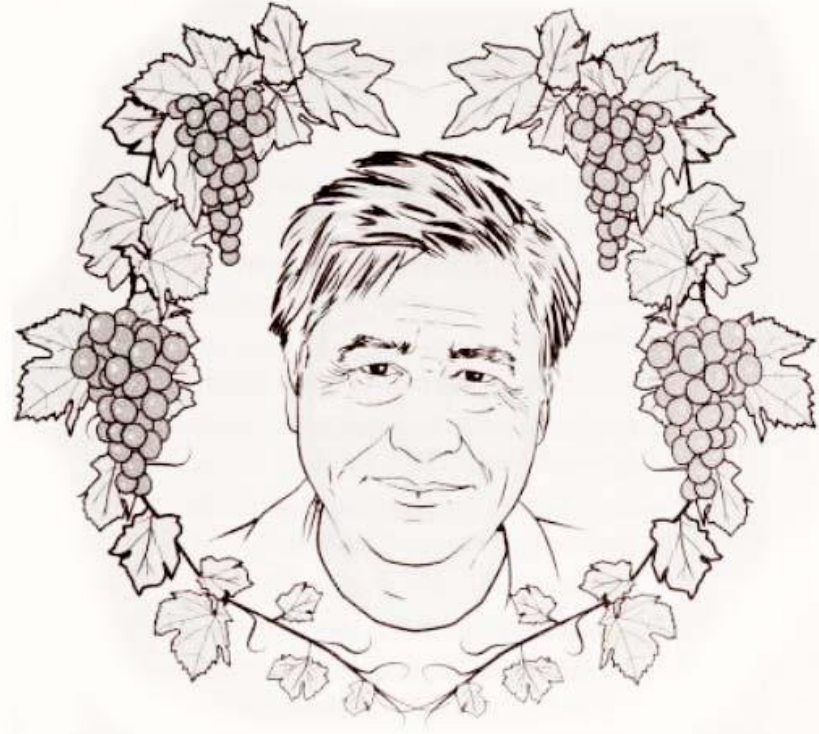
सीज़र शावेज़ ग़रीब और कमज़ोर लोगों के लिए आशा का प्रतीक बन चुके हैं। वे सभी जगहों पर बसे लाटीनो समुदाय के लिए एक प्रेरणा हैं। अमरीका में वे नस्लवाद के ख़िलाफ एक़ सशक्त पर अहिंसक संघर्ष के नायक हैं। सीज़र ने सिद्ध कर दिया कि अगर लोग एकजुट हो जाएं, एक ही आवाज़ में बोलें तो वे किसी अकेले इन्सान से कहीं ज़्यादा ताकतवर बन सकते हैं।

सीज़र शावेज़ के जीवन का तिथिक्रम

1927 - सीज़ारियो एस्त्रादा शावेज़ का एरिज़ोना के पास यूमा में 31 मार्च को जन्म।

1939 - सीज़र का परिवार एरिज़ोना में अपना खेत छोड़, कैलिफोर्निया आता है। वहाँ वे प्रवासी खेत -मज़दूरों की तरह काम करने लगते हैं।

1946 - सीज़र दो वर्षों के लिए नौसेना में सेवाएं देते हैं।

1948 – सीज़र, हैलन फाबेला से 22 अक्तूबर को शादी करते हैं। अगले कुछ सालों में दम्पत्ति के क्रमशः आठ बच्चे होते हैं।

1952 - सीज़र की मुलाक़ात फ्रैड रॉस से होती है और सीज़र कम्युनिटी सर्विस आर्गेनाइज़ेशन (सीएसओ) के लिए काम करने लगते हैं।

1959 - सीज़र को सीएसओ का राष्ट्रीय निदेशक बनाया जाता है।

1962 - सीज़र सीएसओ छोड़ नैशनल फार्म वर्कर्स एसोसिएशन (एनएफडब्लूए) नामक खेत-मज़दूर युनियन आरंभ करते हैं।

1965 - वे सान वॉकीन वैली के अंगूर उत्पादकों के ख़िलाफ़ हड़ताल से जुड़ते हैं।

1966 - मार्च व अप्रैल के महीनों में सीज़र डेलानो से कैलिफोर्निया की राजधानी सैक्रामेंटो तक एक पैदल जुलूस का नेतृत्व करते हैं।

1968 - सीज़र कैलिफोर्निया में उगाए अंगूरों के बहिष्कार का आगाज़ करते हैं।

1970 - 29 जुलाई को अंगूर उत्पादक पाँच साल तक खिंची हड़ताल को समाप्त करते हुए, करारनामे पर दस्तख़त करते हैं।

1975 - 5 जून को एग्रीकल्चरल लेबर रिलेशन्स् एक्ट पारित होता है।

1988 - सीज़र 36 दिन लम्बा उपवास करते हैं ताकि कीटनाशकों के मुद्दे पर ध्यान आकर्षित किया जा सके।

1993 - 23 अप्रेल को सान लूई, एरिज़ोना में उनकी मृत्यु हो जाती है।

वैश्विक तिथिक्रम

1910 से 1920 - मैक्सिको क्रांति के दौरान वहाँ के नागरिक दमनकारी सरकार के ख़िलाफ़ खड़े होते हैं।

1920 - उन्नीसवें संविधान संशोधन द्वारा अमरीका में स्त्रियों को मत देने का अधिकार मिलता है।

1929 से 1939 - अमरीका महामन्दी की चपेट में आता है। बेरोज़गारी बढ़ती है, तमाम लोग बेघर होते हो जाते हैं।

1952 - द हैवीलैण्ड कॉमेट 1, पहला बड़ा व्यावसायिक जेट विमान, यात्रियों को ले उड़ान शुरु करता है।

1953 - सर एडमण्ड हिलेरी व तेनजिंग नोरगे दुनिया की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट पर पहुँचते हैं।

1959 - 21 अगस्त को हवाई औपचारिक रूप से संयुक्त राज्य अमरीका का पचासवाँ राज्य बनता है।

1964 - 9 फरवरी को 'बीटल्स्' अमरीका के एड सलिवन शो में अपनी प्रस्तुति देते हैं। इसके साथ ही अमरीकी संगीत जगत में ब्रिटिश हमला शुरू होता है।

1976 - स्टीव जॉब्स व स्टीव वोज़नियैक एप्पल कमप्यूटर्स इन्कॉरपोरेटेड आरंभ करते हैं जो दुनिया भर में व्यक्तिगत कमप्यूटरों और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अगुवाई करता है।

1977 - पहली स्टार वारस् फिल्म प्रदर्शित होती है और दुनिया भर में मशहूर होती है।

1980 – वॉशिंगटन राज्य में माउन्ट सेंट हैलन ज्वालामुखी फूटता है जिससे निकली राख और गैस पंद्रह मील ऊपर तक उछलती है।

1989 - जर्मनी में बर्लिन की दीवार, जो पश्चिमी व पूर्वी बर्लिन को अलग करती थी, ढ़हा दी जाती है।

1990 - हबल अंतरीक्ष दूरबीन का प्रक्षेपण होता है और वह पृथ्वी की परिक्रमा करने लगता है।

1993 - टास वार्नर 'बनी बेबीस्' नामक सॉफ्ट टॉयस की बिक्री शुरु करते हैं।